१ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ॥

250

अनंदु साहिब सटीक

सिख मिशनरी कालेज (रजिः)
लुधियाना

१ੴ वाहिगुरू जी की फतेह॥

अनंदु साहिब

प्रकाशक

सिख मिशनरी कॉलेज (रजि:)

1051, कूचा 14, फील्ड गंज, लुधियाना - 8 फोन : 663452

सब आफिस : A-143, फतहि नगर, नई दिल्ली - 110 018

जालन्धर आफिस : W.G.-578, सुराज गंज, जालन्धर। फोन : 236947

अनंदु साहिब

इस बाणी के रचनाकार श्री गुरु अमरदास जी हैं । इस बाणी में गुरु जी ने *'अनंद'* की व्याख्या की है । अनंद क्या है ? अमृत है । गुरु अमरदास जी ने आनंद प्राप्ति के गहरे भावों को बड़े सरल शब्दों में हमारे सामने खोल के रखा है। इस बाणी द्वारा यह समझाया गया है कि बाहरमुखी मित्रों, संबंधियों से मेल, लोगों की वाह-वाह, सुन्दर पदार्थों का भोग, काम-कलोल या राग-नाद आनंद के प्रतीक नहीं हैं । जब तक मनुष्य में इस प्रकार की मानसिक भूख है, उसका जी भर नहीं सकता । जब तक पदार्थों का हृदय से मोह नहीं टूटता, जीवात्मा की तृप्ति नहीं हो सकती, जब तक तृप्ति नहीं होती तब तक आत्मरस शून्य ही बना रहता है । आत्मरस सत्य की खोज करने वाली विलीनता के बाद ही प्राप्त होता है । अनंद का मूल स्रोत *'नाम सुमिरन'* है । सुमिरन से ही मन खिलता है, प्रफुल्लित होता है तथा वसंत ऋतु की भांति मन में सुगधि तथा महक उठती है । जब तक मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार जैसी पांच बुराइयों की संगत करता है, जलता रहता है, उसके मन में आत्मिक उल्लास आ ही नहीं सकता । जब गुरमति अनुसार *'पंच सखे गुरभाईयां'* की संगत में वह विचरण करने लगता हैं, तब *'सोइ अचिंता जागि अचिंता'* का अभ्यास परिपक्व होता है । इस प्रकार सतिगुरु जी के शब्द का अनुभवी ज्ञान, जीव में टिकता है तथा वह आज्ञाकारी बन के उस प्रदाता प्रभु के आदेशों का जीवन में अनुसरण करने में जुटा रहता है ।

गुरु अमरदास जी के हृदय में सेवा भाव, गुरू के प्रति सम्मान तथा आदेश-पालन के (इन तीनों) गुणों से जो अमूल्य पदार्थ, गुरु अंगद देव जी ने आपको भेंट किया उसका नाम *'अनंदु'* है । नाम सुमिरन, कीर्तन व भक्ति अनंद का खजाना है । गुरबाणी में सहज अवस्था (चौथे पद की प्राप्ति) को

अनुवाद : स. कुलबीर सिंघ, नई दिल्ली/जून 2000

ही *'अनंद'* कहा गया है । गुरु रामदास जी ने चौथी *लांव (फेरे)* -(सिख विवाह के समय पढ़े जाने वाले) में सहज अवस्था का वर्णन किया है । जहां दुख-सुख, धूप-छांव, आग-पानी एक जैसे दिखते हैं, वहां अनंदु का घर है। गुरमत में सम-भावना की पूर्ति के लिए विडंबना, दुख व त्रासदी के समय भी *अनंद बाणी* का पाठ करने का विधान रखा गया है । सिख धर्म में विवाह का नाम भी *'अनंद कारज'* इस बाणी के नाम से प्रसिद्ध हुआ है क्योंकि विवाह के फेरों के बाद *आनंद साहिब* की छः पौड़ियों का गायन किया जाता है । इस बाणी के पाठ के बाद अरदास यानी प्रार्थना की जाती है व उसके पश्चात कड़ाह प्रशाद बांट दिया जाता है । खालसा पंथ के अलावा संसार के किसी और धर्म में ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा जहां मृत्यु के समय भी *'अनंदु'* जैसी पवित्र बाणी का पाठ किया जाता हो, भाव दुख में भी सुख मनाया जाता हो । *अनंद* की बाणी में, प्रेम और वैराग्य दोनों के अंश भरे हुए हैं ।

❖

੧ੴ (इकओऽअंकार) सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली, महला ३ ॥ अनंदु ॥

यह बाणी महले तीसरे श्री गुरु अमरदास जी की उच्चारण की हुई है जो रामकली राग में दर्ज है।

अनंदु भइआ मेरी माए, सतिगुरु मै पाइया ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती, मनि वजीआ वाधाईआ ॥
राग रतन परवार परीआ, सबद गावण आईआ ॥

पद अर्थ : **अनंदु** -पूर्ण उल्लास । **पाइआ** - प्राप्त कर लिया है । **सहज** - अडोल अवस्था । **सहज सेती** - अडोल अवस्था के साथ । **मनि** - मन में । **वाधाई** - चढ़ती कला, उत्साह पैदा करने वाला गीत । **परीआं** - राग की परियां, रागणियां । **राग रतन** - सुंदर राग ।

अर्थ : हे भाई, हे मेरी माँ ! मेरा पूरा अंतरमन प्रसन्नता से खिल उठा है, क्योंकि मुझे पूरा गुरु मिल गया है । मुझे गुरू भी मिल गया है और साथ ही अडोल अवस्था भी प्राप्त हो गयी है । भाव, गुरु मिलने से मेरा मन अडोल हो गया है, मेरे मन में मानो खुशी के वाद्य बज रहे हैं, सुन्दर राग-रागणियां मानो अपने परिवार सहित मेरे मन में, प्रभु का स्तुति-गायन करने आ गए हों।

सबदो त गावहु हरी केरा, मनि जिनी वसाइआ ॥
कहै नानकु, अनंदु होआ, सतिगुरु मै पाइआ ॥१॥

पद-अर्थ : केरा - का ।

अर्थ : हे भाई ! तुम भी प्रभु की स्तुति के गीत गाओ । जिन्होंने स्तुति गायन का शबद मन में बसाया है उनके अंदर पूर्ण उल्लास की अवस्था आ जाती है ।

गुरू नानक जी कहते हैं, मेरे अंदर भी आनंद बन गया है, क्योंकि मुझे सतगुर मिल गया है ॥ १ ॥

भाव : गुरु से परमात्मा के स्तुति गायन की निधि प्राप्त होती है तथा उसी स्तुति-गायन की कृपा द्वारा मनुष्य के मन में पूर्ण उल्लस पैदा हो जाता है ।

ए मन मेरिआ, तू सदा रहु हरि नाले ॥
हरि नालि रहु, तू मन मेरे, दूख सभि विसारणा ॥
अंगीकारु ओहु करे तेरा, कारज सभि सवारणा ॥

पद अर्थ : **मन मेरे** - ऐ मेरे मन! **सभि** - सारे । **विसारणा** - दूर करने

वाला । अंगीकारु - पक्ष, मदद ।

अर्थ : हे मेरे मन ! तू सदा हरि के चरणों में जुड़ा रह । हे मेरे मन ! तूं सदा प्रभु को याद रख । वह प्रभु सारे दुख दूर करने वाला है । वह सदा तेरी मदद करने वाला है, तेरे समस्त कार्य पूर्ण करने में समर्थ है ।

सभना गला समरथु सुआमी, सो किउ मनहु विसारे ।।
कहै नानकु, मंन मेरे, सदा रहु हरि नाले ।। २ ।।

पद अर्थ : **समरथु** - करने योग्य । **मनहु** - मन से । **विसारे** - बिसारता है ।

अर्थ : हे भाई ! उस मालिक प्रभु को क्यों अपने मन से भुलाता है जो सारे कार्य करने योग्य है। नानक जी कहते हैं - हे मेरे मन ! तूं सदा प्रभु चरणों से जुड़ा रह ।। २।।

भाव : जो मनुष्य ईश्वर की भक्ति में जुड़ा रहता है, परमात्मा उसके सारे दुख दूर कर देता है, उसके सारे काम संवारता हैं, वह मालिक सारे काम करने योग्य है ।

साचे साहिबा, किआ नाही घरि तेरै ।।
घरि त तेरै सभु किछु है, जिसु देहि सु पावए ।।
सदा सिफति सलाह तेरी, नामु मनि वसावए ।।

पद अर्थ : **घरि तेरै** - तेरे घर में । **त** - ता । **सभु किछु** - प्रत्येक वस्तु । **देहि** - तूं देने वाला है । **सु** - वह मनुष्य । **पावए** - पाए, पा लेता है, प्राप्त करता है । **सिफति सलाह** - बढ़ाई, सम्मान, स्तुति । **मनि** - मन में । **वसावए** - बसाए, बसाता है ।

अर्थ : हे सदा कायम रहने वाले मालिक प्रभु ! मैं तेरे दर से मन का आनंद मांगता हूं, पर तेरे घर में कौन सी चीज नहीं है ? तेरे घर में तो हरेक वस्तु मौजूद है । इन्हें वही मनुष्य प्राप्त करता है जिसे तूं स्वयं देता है, फिर वह मनुष्य तेरा मान-सम्मान व स्तुति-गान अपने मन में बसाता है जिसकी कृपा से उसके मन में आनंद पैदा हो जाता है ।

नामु जिन कै मन वसिआ, वाजे शबद घनेरे ।।
कहै नानकु, सचे साहिब, किआ नाही घरि तेरै ।।३।।

पद अर्थ : **जिन कै मनि** - जिसके मन में । **वाजे** - बजते हैं । **शबद** - साज़ों की आवाज, राग सुरें । **घनेरे** - बहुत । **सचे** - हे सदा कायम रहने वाले ।

अर्थ : जिन व्यक्तियों के मन में तेरे नाम का वास है, उनके अन्दर, मानो बहुत सारे साज़ों की सुरें इकट्ठी बजने लग पड़ती हों भाव, उनके मन

में वही खुशी और उल्लास उत्पन्न होता है जो कई इकट्ठे साजों को सुनकर पैदा होता है ।

नानक कहते हैं - हे कायम रहने वाले मालिक प्रभु ! तेरे घर में किसी वस्तु की कमी नहीं है और मैं तेरे दर से आनंद का दान मांगता हूं ।।३।।

भाव : जिस मनुष्य पर प्रभु कृपा दृष्टि करता है, वह मनुष्य परमात्मा का स्तुति-गायन, प्रभु के नाम को अपने मन में बसाता है । नाम की कृपा से मनुष्य में आत्मिक आनंद पैदा होता रहता है ।

साचा नामु, मेरा आधारो ।।
साचु नामु आधारु मेरा, जिनि भुखा सभि गवाईआ ।।
करि सांति सुख, मनि आइ वसिआ, जिनि इच्छा सभि पुजाईआ ।।

पद अर्थ : आधारो - आसरा । जिनि - जिस नाम ने । भुख - लालच । करि - पैदा कर के । मनि - मन में । इच्छा- मन की इच्छाएं । सभि - सभी ।

अर्थ : प्रभु की कृपा से उसका स्थाई नाम मेरे जीवन का आश्रया बन गया है । जिस हरि नाम ने मेरे सारे लोभ-लालच दूर कर दिए हैं, जिस हरि नाम ने मेरे मन की इच्छाएं पूरी कर दी हैं, जो हरि नाम मेरे अन्दर शान्ति व सुख पैदा कर, मेरे मन में आ टिका है, वह स्थाई नाम मेरे जीवन का आधार बन गया है ।

सदा कुरबाणु कीता गुरु विटहु, जिस दीआ एहि वडिआईआ ।।
कहै नानकु, सुणहु संतहु, शबदि धरहु पिआरो ।।
साचा नामु, मेरा आधारो ।।४।।

पद अर्थ : कुरबाणु - कुर्बान, सदके । विटहु - से ।

उच्चारण : (1) *आधारो* का उच्चारण *अधारो* यानी बिना (ा) की मात्रा के करना अशुद्ध है ।

(2) *भुख, गवाइआ, इछा, पुजाइआ, विटहु (विटो), वडिआइआ* शब्दों का उच्चारण बिंदी (ं) सहित करना है ।

अर्थ : मैं अपने आपको अपने गुरु से कुर्बान करता हूं, क्योंकि ये सारी बरकतें गुरु की ही हैं। गुरु नानक कहते हैं - हे संतजनो ! गुरु का शबद सुनो, गुरु के शब्द में प्रेम बनाओ । सतिगुर की कृपा से प्रभु का सदा कायम रहने वाला नाम मेरे जीवन का आधार बन गया है ।।४।।

भाव : गुरु की कृपा से परमात्मा का नाम धन प्राप्त होता है । जिस

मनुष्य को नामधन प्राप्त हो जाता है, उसके मन से माया के सारे लालच दूर हो जाते हैं व उसके अन्दर शान्ति पैदा हो जाती है, आत्मिक आनंद पैदा हो जाता है ।

वाजे पंच सबद, तितु घरि सभागै ।।
घरि सभागै, सबद वाजे, कला जितु घरि धारीआ ।।
पंच दूत तुधु वसि कीते, कालु कंटकु मारिआ ।।

पद अर्थ : **वाजे** - बजते हैं, बजे हैं । **पंच सबद** - पाँच प्रकार के साज़ों की मिली हुई सुरें । **तितु** - उसमें । **तितु घरि** - उस हृदय रूपी घर में । **सभागै** - भाग्यशाली हैं । **तितु घरि सुभागै** - उस भाग्यशाली हृदय में । **कला** - सत्ता । **जितु घरि** - जिस घर में । **धारीआ** - तूंने पाई है । **पंच दूत** - कामादिक पांच शत्रु । **कंटकु** - कांटा । **कंटकु काल** - भयानक काल, मौत का भय ।

अर्थ : जिस हृदय में हे प्रभु ! तेरा वास है, उस भाग्यशाली हृदय में मानो पांच प्रकार के साज़ों की मिली हुई सुरें बज पड़ती हैं भाव, उसके हृदय में पूर्ण आनंद बन जाता है, हे प्रभु ! तूं उसके पांचों कामादिक शत्रु अपने वश में कर लेता है तथा भय वाला काल भाव, मौत का भय दूर कर देता है ।

धुरि करमि पाइआ, तुधु जिन कउ, सि नामि हरि कै लागे ।।
कहै नानकु तह सुखु होआ, तितु घरि अनहद वाजे ।।५।।

पद अर्थ : **धुरि** - प्रारंभ से, अनंत काल से । **करमि** - कृपा से । **सि** - वे, वे व्यक्ति । **नामि** - नाम में । **अनहद** - अन-हद, बिना बजाए बजने वाला, एक रस, लगातार ।

अर्थ : केवल वही मनुष्य हरि-नाम से जुड़ते हैं जिनके भग्य में तूने आरंभ से ही अपनी कृपा से सुमिरन का लेख लिख के रख दिया है ।

नानक जी कहते हैं - उस हृदय में सुख पैदा होता है, उसके हृदय में मानो एक-रस बाजे बजते हैं ।।५।।

भाव : परमात्मा आरंभ से ही जिन मनुष्यों के भाग्य में नाम सुमिरन का लेख लिख देता है, वह मनुष्य नाम से जुड़ते हैं । नाम की कृपा से कामादिक पांचों शत्रु, उन पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते । इस प्रकार उनमें आत्मिक आनंद बना रहता है ।

साची लिवै बिनु, देह निमाणी ।।
देह निमाणी, लिवै बाझहु, किआ करे वेचारीआ ।।

पद अर्थ : **साची लिव** - सच्ची लगन, सदा कायम रहने वाली लगन, सदा स्थिर प्रभु से प्रीति । **देह** - शरीर । **निमाणी** -निराश्रित-सी, निरीह स्वभाव की । **किआ करे**

- क्या करती है ? जो कुछ करती है नकारे काम ही करती है ।

अर्थ : सर्वकाली प्रभु के चरणों की लगन के आनंद के बिना इस मनुष्य का शरीर निरीह- सा ही रहता है । प्रभु चरणों की प्रीति के बिना निरीह हुआ येर शरीर जो कुछ भी करता है, नकारे (गलत) काम ही करता है ।

तुधु बाझु, समरथ कोइ नाही, क्रिपा करि बनवारीआ ।।
एस नउ होरु थाउ नाहीं, सबदि लागि सवारीआ ।।
कहै नानकु, लिवै बाझहु, किआ करे वेचारीआ ।। ६।।

पद अर्थ : **बनवारी** - हे सृष्टि के मालिक ! **सवारीआ** - अच्छे मार्ग पर लगाया जा सकता है । **वेचारीआ** - पराधीन, माया से प्रभावित ।

अर्थ : हे जगत के मालिक ! तेरे बिना ऐसा कोई स्थान नहीं जहां यह शरीर अच्छी दिशा में लग सके, कोई और इसे सही रास्ते लाने योग्य ही नहीं । तूं ही कृपा कर, ताकि यह गुरु के शब्द में लग कर सुधर जाए ।

नानक कहते हैं - प्रभु चरणों के प्रेम के बिना यह शरीर पराधीन भाव, माया से प्रभावित जो कुछ करता है, निकम्मा काम ही करता है ।

भाव : जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु के चरणों से प्रेम ना हो, वह सदा माया के प्रभाव में दुखी रहता है । मनुष्य की सारी ज्ञानेंद्रियां माया की दौड़-धूप में लगी रहती हैं । परमात्मा स्वयं कृपा करे, तो गुरु के शबद में जुड़कर यह मनुष्य सुधर जाता है ।

आनंदु आनंदु, सभु को कहै, आनंदु, गुरु ते जाणिआ।।
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते, क्रिपा करे पिआरिआ ।।
करि किरपा किलविख कटे, गिआन अंजनु सारिआ ।।

पद अर्थ : **सभु को** - हरेक जीव । **पिआरिआ** - हे प्यारे भाई । **क्रिपा करे** - जब गुरु कृपा करता है । **किलविख** - पाप । **अंजनु** - सुरमा । **सारिआ** - आंखों में डालता है ।

अर्थ : कहने को तो हर कोई कह देता है कि मुझे आनंद प्राप्त हो गया है, पर वास्तविक आनंद की सूझ व समझ गुरु से ही प्राप्त होती है ।

हे प्यारे भाई ! वास्तविक आनंद की प्राप्ति सदा गुरु से ही होती है। वह मनुष्य असल आनंद प्राप्त करता है, जिस पर गुरु कृपा करता है । गुरु कृपा करके उसके अंदर से पाप काट देता है, और उसकी आंखों में आत्मिक जीवन के ज्ञान का सुरमा डालता है ।

अंदरहु जिन का मोहु तुटा, तिन का सबदु, सचै सवारिआ ।।

कहै नानक, एहु अनंदु है, आनंदु गुर ते जाणिआ ।।७।।

पद अर्थ : **अंदरहु** - मन में से । **सचै** - सर्वकाली परमात्मा ने । **सबदु** - बोल । **सबदु सवारिआ** - बोल संवार दिया, भाव कड़वे बोल, निंदा आदि के बोल नहीं बोलता। **एहु अनंदु है** - वास्तविक आत्मिक आनंद यह है कि व्यक्ति का कड़वाहट और निंदा आदि वाला स्वभाव ही नहीं रहता ।

अर्थ : जिन के मन में से माया का मोह मिट जाता है, अकाल पुरख उनकी वाणी को नम्र, शुद्ध व मृदुल कर देता है ।

नानक कहते हैं - वास्तविक आत्मिक आनंद यही है, व यह आनंद गुरु से ही समझा जा सकता है ।।७।।

भाव : जिस व्यक्ति को वास्तविक आत्मिक आनंद प्राप्त होता है, उसका जीवन इतना प्रेम पूर्ण बन जाता है कि वह सदा के लिए मीठा, नम्र व मृदुल हो जाता है । यह आत्मिक आनंद गुरु से ही मिलता है । गुरु उस मनुष्य के मन से सारे विकार दूर कर देता है तथा उसे आत्मिक जीवन का ज्ञान प्रदान करता है।

बाबा, जिसु तू देहि, सोई जनु पावै ।।
पावै त सो जनु, देहि जिस नो, होरि, किआ करहि वेचारिआ ।।

पद अर्थ : **बाबा** - हे हरी । **देहि** - (आनंद का दान) देता है । **होरि वेचारिआ** - और बेचारे जीव । **किआ करहि** - क्या कर सकते हैं, और माया के आगे उनकी एक नहीं चलती ।

अर्थ : हे प्रभु ! जिस मनुष्य को तूं आत्मिक आनंद की निधि प्रदान करता है, वही उसे प्राप्त करता है। वही मनुष्य इस आध्यात्मिक निधि को भोगता है जिसको तूं देता है ।अन्य बेचारों की माया के बहाव के आगे कोई पेश नहीं जाती ।

इकि भरमि भूले फिरहि दहदिसि, इकि नामि लागि सवारिआ ।।
गुरपरसादी, मन भइया निरमलु, जिना भाणा भावए ।।८ ।।

उच्चारण : *देहि, करहि, फिरहि* आदि शब्दों का उच्चारण बिंदी (ं) लगाकर *देहिं, करहिं, फिरहिं* करना है ।

पद अर्थ : **इकि** - कई जीव । **भरमि** - माया की भटकना में । **दहदिसि** - दसों दिशाओं में । **भाणा**- ईश्वरेच्छा।

अर्थ : कई व्यक्ति माया के भ्रम में सही रास्ते से भूले हुए इधर-उधर भटकते फिरते हैं, कई भाग्यशालियों को तूं अपने नाम से जोड़कर उनका जन्म संवार देता है, गुरु की कृपा से उनका मन पवित्र हो जाता है और

वे आत्मिक आनंद प्राप्त करते हैं ।

नानक कहते हैं - हे प्रभु ! जिसको तूं आत्मिक आनंद का दान देता है वही इसे भोग सकता है ।।८।।

भाव : अपने उद्यम व परिश्रम से कोई भी प्राणी आत्मिक आनंद नहीं पा सकता, क्योंकि माया के समक्ष किसी की पेश नहीं जाती । जिन पर प्रभु कृपा करते हैं, उनको गुरु मिलाता है । गुरु के बताए मार्ग पर चलकर उन विकारों से वे बचते हैं, तथा हरि नाम से जुड़ जाते हैं । उनमें सदा शान्ति का प्रभाव बना रहता है ।

आवहु संत पिआरिहो, अकथ की करह कहाणी ।।
करह कहाणी अकथ केरी, कितु दुआरै पाईऐ ।।
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ।।

उच्चारण : *आवहु का आवो, पिआरिहो का पिआरिओ, करह का करहं गावहु का गावो, सुणहु का सुणो, संतहु का संतो, कथिहु का कथिओ उच्चारण करना है ।*

पद अर्थ : **अकथ** - जिसके सभी गुणों का वर्णन न किया जा सके । **करह** - हम करें । **दुआरै** - किस तरीके से ? **सउपि** - हवाले (सपुर्द) कर दे । **हुकमि मंनिऐ** - यदि प्रभु की आज्ञा (सिर माथे) मान ली जाए ।

अर्थ : हे प्यारे संतजनो ! आओ, हम मिल कर अनंत गुणों वाले परमात्मा के गुण-गान की बातें करें, उस प्रभु की कहानियां सुनें व सुनाएं, जिसके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता है । पर यदि आप पूछें कि वह प्रभु किस प्रकार से मिलता है तो उत्तर यह है कि स्वयं को माया के हवाले करने के बजाए अपने तन, मन, धन सब गुरु के हवाले करो, इस प्रकार यदि गुरु का हुकम मीठा लगने लगे तो प्रभु मिल जाता है ।

हुकमु मंनहि गुरु केरा, गावहु सची बाणी ।।
कहै नानकु, सुणहु संतहु, कथिहु अकथ कहाणी ।।९।।

अर्थ : हे संतजनो! गुरु के हुक्म पर चलो, व सर्वकाली प्रभु के गुण-गान की बाणी गाया करो । नानक कहते हैं - हे संतजनो ! सुनो, प्रभु से मिलने का व आत्मिकं आनंद पाने का सही मार्ग यही है कि उस अकथ्य प्रभु की कहानियां किया करो ।।९।।

भाव : आत्मिक आनंद देने वाले ईश्वर से मिलाप का एक ही रास्ता है कि मनुष्य स्वयं को गुरु को समर्पित कर दे । बस ! गुरु द्वारा बताए मार्ग

पर चले तथा प्रभु के गुण-गान करता रहे । उसके मन में आनंद ही आनंद बना रहेगा ।

ए मन चंचला, चतुराई किनै न पाइआ ।।
चतुराई न पाइआ किनै, तू सुणि मंन मेरिआ ।।

पद अर्थ : **किनै** - किसी मनुष्य ने भी । **मंन मेरिआ** - हे मेरे मन । (शब्द 'मंन' की बिंदी एक मात्रा बढ़ाने के लिए ही है, सही शब्द 'मन' ही है ।

अर्थ : हे चंचल मन ! चालाकियों से किसी ने भी आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं किया । हे मेरे मन ! तूं ध्यान से सुन ले कि किसी जीव ने भी चतुराई से प्रभु के मिलाप का आनंद प्राप्त नहीं किया, कि वह अंदर से मोहिनी माया में भी व्यसित रहे और ऊपर से केवल बातों से आत्मिक आनंद चाहे, यह नहीं हो सकता ।

एह माइआ मोहणी, जिनि एतु भरमि भुलाइआ ।।
माइआ त मोहणी तिनै कीती, जिनि ठगउली पाईआ ।।

पद अर्थ : **जिनि** - जिस माया ने । **एतु भरमि** - इस भ्रम में कि मोह एक मीठी वस्तु है । **भुलाइआ** - कुमार्ग पर डाल दिया । **तिनै** - उसी प्रभु ने । **जिनि** - जिस प्रभु ने । **ठगउली** - ठग जड़ी ।

अर्थ : यह माया जीव को अपने मोह जाल में फंसाने में बहुत समर्थ है, इसने भ्रम में डाला हुआ है कि मोह मीठी वस्तु है, इस प्रकार कुमार्ग पर डाले रखती है । पर जीव के वश में भी क्या है ? जिस प्रभु ने माया के मोह की ठग-बूटी की जीवों को लत लगाई है उसी ने इस मोहिनी माया को उत्पन्न भी किया है ।

कुरबाणु कीता तिसै विटहु, जिनि मोहु मीठा लाइआ ।।
कहै नानकु, मन चंचल, चतुराई किनै ना पाइआ ।।१०।।

पद अर्थ : **कुर्बान** - सदके । **विटहु** - से ।

अर्थ : हे मेरे मन ! स्वयं को माया पर कुर्बान करने के बजाए उस प्रभु पर कुर्बान कर, जिसने मीठा मोह लगाया है, तब ही यह मीठा मोह टूटेगा

नानक कहते हैं - हे मेरे चंचल मन ! चतुराइयों द्वारा कभी कोई प्रभु की संगत का आत्मिक आनंद नहीं पा सकता है ।।१०।।

भाव : जो मनुष्य मन से माया के मोह में फंसा रहे, व बाहर से केवल चतुराई की बातों से यदि वह आत्मिक आनंद की प्राप्ति चाहे, तो वह नहीं हो सकता ।

ए मन पिआरिआ, तू सदा सचु समाले ।।
एहुं कुटंबु तू जि देखदा, चलै नाही तेरै नाले ।।
पद अर्थ : समाले - संभाल, याद रख । जि - जो ।

पद अर्थ : हे प्यारे मन ! यदि तूं सदा आत्मिक आनंद चाहता है तो सदैव सच्चे प्रभु की याद को अपने अंदर संभाल कर रख । यह जो परिवार तू देखता रहा है, इसने तेरे साथ नहीं जाना ।

साथि तेरै चलै नाहि, तिसु नालि, किउ चितु लाईऐ ।।
ऐसा कंमु मूले न कीचै, जितु अंति पछोताईऐ ।।

पद अर्थ : मूले न - बिल्कुल नहीं । कीचै - करना चाहिए । जितु - जिस कारण । अंति - अंत समय, आखिर को ।

अर्थ : हे भाई ! इस परिवार के मोह में क्यों फंसता है ? यह तेरे साथ अंत तक नहीं निभ सकता । जिस काम के करने से अंत में हाथ मलने पड़ें, वह काम कभी भी नहीं करना चाहिए ।

सतिगुरु का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ।।
कहै नानकु, मन पिआरे, तू सदा सचु समाले ।।११।।

अर्थ : हे भाई ! सतिगुरु की शिक्षा ध्यान से सुन, यह गुरु उपदेश तुझे सदा याद रखना चाहिए ।

नानक कहते हैं - हे प्यारे मन ! यदि तूं आनंद चाहता है तो सर्वकाली प्रभु की याद को हर समय अपने मन में संभाल के रख ।।११।।

भाव : स्थाई आत्मिक आनंद की प्राप्ति का एक ही तरीका है कि मनुष्य, दुनिया के भौतिक मोह में फंसे रहने की बजाए अपने मन में प्रभु की याद बसाए रखे । बस ! यही है गुरु की शिक्षा जिसे कभी भुलाना नहीं चाहिए।
।

नोट : अगली पउड़ी नं: 12 को इस पउड़ी से मिला कर पढ़ना है, तो अर्थ इस प्रकार होंगे-तूं सदा प्रभु को अपने मन में संभाल कर रख और कह- हे अगंम अगोचर !

अगम अगोचरा, तेरा अंतु न पाइआ ।।
अंतो न पाइआ किनै तेरा, आपणा आपु तू जाणहे ।।
पद अर्थ : अगंम - हे अ-पहुंच प्रभु । अगोचरा - हे अगोचर हरी । अगोचर - आ -गो -चर, जिस तक ज्ञानेंद्रियों की पहुंच न हो सके । किनै - किसी ने भी । आपु - अपने स्वरूप को । जाणहे - जानना, तूं जानता है ।

अर्थ : हे प्यारे मन ! सदा प्रभु को अपने मन में संभाल के रख तथा उसके आगे इस प्रकार प्रार्थना कर - हे अगम्य, अपहुंच हरी ! हे इन्द्रियों की

पहुंच से दूर रहने वाले प्रभु । तेरे गुणों का किसी ने अंत नहीं पाया । अपने वास्तविक स्वरूप को तूं ही जानता है, और कोई जीव तेरे गुणों का अंत नहीं पा सकता ।

जीअ जंत सभि खेलु तेरा, किआ को आखि वखाणए ।।
आखहि वेखहि सभि तू है, जिनि जगतु उपाइआ ।।
कहै नानकु, तू सदा अगंमु है, तेरा अंतु न पाइआ ।।१२।।

उच्चारण : (1) *अगम* का उच्चारण *अगंम* करना है ।

(2) *आखहि, वेखहि* का उच्चारण बिंदी(ं) सहित *आखहिं, वेखहिं* करना है ।

पद अर्थ : सभि– सारे । **आखि–** कह कर । **वखाणए–** वर्णन करे, बयान करे । **को –** कोई जीव । **आखहि –** तूं कहता है, तूं बोलता है । **वेखहिं –** तूं संभाल करता है । **जिनि–** जिस ने ।

अर्थ : कोई और जीव तेरे गुणों का अपनी जिव्हा से वर्णन करे भी किस तरह? ये सारे जीव तो तेरी ही रचना का खेल हैं । प्रत्येक जीव में तूं स्वयं बोलता है, प्रत्येक जीव की तूं स्वयं संभाल करता है, जिस ने स्वयं इस संसार की रचना की है ।

नानक कहता है - हे मेरे प्यारे मन ! प्रभु के सम्मुख इस तरह विनती कर - तूं सदा अगम्य है, तेरे पर पहुंचना कठिन है, कोई जीवन तेरे अनंत गुणों का पारावार नहीं पा सका है ।

सुरि नर मुनि जन अंमृतु खोजदे, सु अंमृतु, गुर ते पाइआ ।।
पाइआ अंमृतु, गुरि कृपा कीनी, सचा मनि वसाइआ ।।

पद अर्थ : सुरि –देवता ।**मुनि जनि–** मुनी लोग, ऋषि लोग । **अंमृत –** आत्मिक आनंद देने वाला नाम-जल । **गुरि –** गुरू ने । **मनि –** मन में ।

अर्थ :आत्मिक आनंद एक ऐसा अमृत है जिस को देवता, साधारण मनुष्य, मुनि लोग ढूंढते फिरते हैं पर यह अमृत गुरू से ही प्राप्त होता है । जिस मनुष्य पर गुरू ने कृपा की है उस ने यह अमृत प्राप्त कर लिया है क्योंकि उस ने सर्वकाली प्रभु को अपने मन में बसा लिया है ।

जीअ जंत सभि तुधु उपाए, इकि वेखि परसणि आइआ ।।
लबु लोभु अहंकारु चूका, सतिगुरू भला भाइआ ।।
कहै नानकु, जिस नो आपि तुठा, तिनि अंमृतु, गुर ते पाइआ ।।१३।।

पद अर्थ : सभि – सारे । **इकि –** कई जीव । **वेखि –** गुरु को देख कर । **परसणि –** गुरु के चरण परसने के लिए । **भला भाइआ –** मीठा लगता है, प्यारा लगता है । **ते –** तो ।

अर्थ : हे प्रभु ! सारे जीव जंतु तूने ही पैदा किए हैं, तूं ही इनको प्रेरित करता है, तेरी प्रेरणा से ही कई जीव जंतु गुरु का दीदार करके उसके चरण छूने आते हैं, सतिगुरु उनको प्यारा लगता है, सतिगुरु की कृपा से ही उनका लोभ व अहंकार दूर हो जाता है ।
नानक कहते हैं - प्रभु जिस मनुष्य पर प्रसन्न होता है, वह मनुष्य आत्मिक आनंद रूपी अमृत, गुरु से प्राप्त कर लेताा है ।।१३।।

भाव : जिस मनुष्य पर प्रभु कृपा करता है, उसको गुरु मिल जाता है । गुरु से उसे आत्मिक आनंद देने वाला नाम-जल मिलता है । वह मनुष्य सदा कायम रहने वाले प्रभु को अपने हृदय में बसाए रखता है । उसके मन से लोभ, मोह, अहंकार आदि सारे विकार दूर हो जाते हैं।

भगता की चाल निराली ।।
चाल निराली भगताह केरी, बिखम मारगि चलणा ।।
लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना, बहुतु नाही बोलणा ।।

पद अर्थ : भगत - आत्मिक आनंद लेने वाले व्यक्ति । चाल - जीवन युक्ति । निराली - अलग । केरी - की । बिखम - विषम, कठिन । मारगि - मार्ग पर । तजि -त्याग कर ।

अर्थ : जो भाग्यशाली व्यक्ति आत्मिक आनंद मानते हैं वही भक्त हैं व उन भक्तों की जीवन-युक्ति औरों से अलग होती है । वह बहुत कठिन मार्ग पर चलते हैं । वह लोभ, मोह, अहंकार व माया की तृष्णा त्यागते हैं व बहुत नहीं बोलते भाव, अपनी शोभा नहीं करते ।

खंनिअहु तिखी, वालहु निकी, एतु मारगि जाणा ।।
गुर परसादी, जिनी आपु तजिआ, हरि वासना समाणी ।।
कहै नानकु, चाल भगता, जुगहु जुगु निराली ।।१४।।

उच्चारण :(1) *भगता, भगताह, खंनिअहु(खंनिउ) वालहु(वालो), परसादी,* का उच्चारण बिंदी (˙) सहित *भगतां, भगतांह, खंनिअहुं(खंनिउं), वालहुं(वालों)* करना है ।

(2) इसी प्रकार परसादी ਪ੍ਰਸਾਦੀ और वासना ਵਾਸਨਾ का उच्चारण पंजाबी वाले ਸ स के पैर में बिंदी (.) लगा कर ਪ੍ਰਸ਼ਾਦੀ परशादी, ਵਾਸ਼ਨਾ वाशना करना है।

(3) *जुगहु* का शुद्ध उच्चारण *जुगो* है *जुग + हो* नहीं ।

पद अर्थ : खंनिअहु - खडे से, तलवार से । वालहु - बाल से । निकी - बारीक । एतु मारग - इस मार्ग पर । आपु - स्वयं । जुगहु जुगु - हरेक युग में सदा ही, हर समय ।

अर्थ : इस मार्ग पर चलना बहुत कठिन खेल है, क्योंकि यह मार्ग

खडे की धार से भी तीखा है और बाल से भी अधिक पतला है । इससे गिरने की भी संभावना हर समय बनी रहती है, क्योंकि भौतिक, दुनियां वाली वासना मन की अडोलता को धक्का देती है । पर जिन्होंने गुरु कृपा से *मैं* का भाव छोड़ दिया है, उनकी माया की वासना हरी प्रभु की याद में खत्म हो जाती है। ।

नानक कहते है - आत्मिक आनंद मनाने वालों की जीवन-युक्ति दुनियां के लोगों से अलग होती है । वह विकारों से बचे रहते हैं, वह अपनी शोभा नहीं चाहते । पर उस मार्ग पर चलना बहुत ही कठिन है । गुरु की ही कृपा हो तो *मै* की भावना समाप्त की जा सकती है ।

जिउ तू चलाइहि, तिव चलह सुआमी, होरु किआ जाणा गुण तेरे ।।
जिव तू चलाइहि तिवै चलह, जिना मारगि पावहो।।

पद अर्थ : चलह - हम जीव चलते हैं । होरु - और भेद । किआ जाणा - मैं नहीं जानता । मारगि - आनंद के मार्ग पर । पावहे - पाएं, तू पाता है ।

अर्थ : हे मालिक प्रभु! जैसे तू हम जीवों को जीवन पथ पर चलाता है, वैसे ही हम चलते हैं । बस ! मुझे इतनी ही समझ पड़ी है, तेरे गुणों का और भेद मैं नहीं जानता । मैं यही समझा हूं कि जिस रास्ते पर तूं हमें चलाता है, वही रास्ता हम चलते हैं ।

करि किरपा जिन नामि लाइहि, सि हरि हरि सदा धिआवहे ।।
जिस नो कथा सुणइहि आपणी, सि गुर दुआरै सुखु पावहे ।।
कहै नानकु, सचे साहिब, जिउ भावै, तिवै चलावहे ।। १५।।

उच्चारण : *चलाइहि, चलह, पावहे, लाइहि, धिआवहे, सुणाइहि, तिवै, चलावहे* आदि शब्दों का उच्चारण बिंदी(ं) सहित *चलाइहिं, चलहं, पावहें, लाइहिं, धिआवहें, सुणाइहिं, तिवैं, चलावहें* करना है ।

पद अर्थ : लाइहि - तूं लाता है। सि - वह व्यक्ति । धिआवहे - ध्यान करते हैं, सुमिरन करते हैं । सुखु - आत्मिक आनंद । तिवै - उसी प्रकार, त्यों ही ।

अर्थ : जिन व्यक्तियों को आत्मिक आनंद मनाने के मार्ग पर चलाता है, जिनको कृपा करके अपने नाम से जोड़ता है, वह व्यक्ति सदा ही हरि नाम सिमरते हैं । जिस मनुष्य को तूं अपने गुण-गाण की वाणी सुनाता है, सुनने की ओर प्रेरता है, वह व्यक्ति गुरु के दर पर (पहुंच कर) आत्मिक आनंद प्राप्त करते हैं ।

नानक कहते हैं - हे सर्वकाली प्रभु ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, उसी प्रकार

तूं हमें जीवों को जीवन मार्ग पर चलाता है ।।१५।।

भाव : आत्मिक आनंद की निधि विशुद्ध रूप से परमात्मा के अपने हाथ में है । जिस-जिस मनुष्य पर कृपा करके प्रभु अपने नाम का सुमिरन करने के लिए प्रेरित करता है, वही मनुष्य गुरु के दर पर पहुंच कर सुमिरन की कृपा से आत्मिक आनंद प्राप्त करता है ।

ऐहु सोहिला सबदु सुहावा ।।
सबदो सुहावा सदा सोहिला, सतिगुरु सुणाइआ ।।
एहु तिन कै मंनि वसिआ, जिन धुरहु लिखिआ आइआ ।।

पद अर्थ : सोहिला - खुशी का गीत, आनंद देने वाला गीत । सुहावा - सुन्दर । एहु - यह सोहिला । मंनि - मन में (अक्षर 'म' की बिन्दी केवल मात्रा बढ़ाने के लिए है, सही शब्द 'मन' है)।

अर्थ : सतिगुरु का यह सुंदर शबद आत्मिक आनंद देने वाला गीत है, यकीन मानो कि सतिगुरु ने जो सुंदर शबद सुनाया है वह सदा आत्मिक आनंद देने वाला है । पर यह गुरु का शबद उनके मन में बसता है जिनके मस्तिष्क पर दरगाह से ही अंकित होता है ।

इकि फिरहि घनेरे, करहि गला, गली किनै ना पाइआ ।।
कहै नानकु, सबदु सोहिला, सतिगुरु सुणाइया ।।१६।।

पद अर्थ : इकि - कई जीव । गली - केवल बातों से ।

अर्थ : अनेकों ऐसे व्यक्ति हैं जिनके मन में गुरु शबद तो नहीं बसा, परन्तु ज्ञान की बातें करते हैं । केवल बातों से आत्मिक आनंद किसी को नहीं मिलता ।

नानक कहते हैं - प्रभु द्वारा सुनाया शबद ही आत्मिक आनंद प्रदान करता है ।।१६।।

भाव : सतिगुरु की बाणी आत्मिक आनंद प्राप्त करने का सही तरीका है । पर गुरबाणी उन्हीं के हृदय में बसती है जिनके भाग्य में दरगााह से ही यह लिखा होता है ।

पवित होए से जना, जिनी हरि धिआइआ ।।
हरि धिआइआ पवितु होए, गुरमुखि जिनी धिआइआ ।।
पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ, पवितु संगति सबाईआ ।।

पद अर्थ : गुरमुखि - गुरु की शरण पड़ कर । सहित सिउ - साथ । कुटंब - परिवार । सबाईआ - सारी ही ।

अर्थ : गुरु शबद की कृपा से, जिन व्यक्तियों ने परमात्मा के नाम

का सुमिरन किया है उनके अंदर ऐसा आनंद उत्पन्न हुआ कि वे माया के प्रभाव से प्रेरित नहीं हुए व वे व्यक्ति पवित्र जीवन वाले बन गए । गुरु की शरण में जिन-जिन व्यक्तियों ने हरि के नाम का सुमिरन किया वह शुद्ध आचरण वाले हो गए । उन्हीं के कारण उनके माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्य पवित्र जीवन वाले बने, जिस जिस ने उनकी संगत की, वह सारे पवित्र हुए ।

कहदे पवितु, सुणदे पवितु, से पवितु जिनी मनि वसाइआ ।।
कहै नानकु से पवितु, जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइया ।।१७।।

उच्चारण : *जिउ, जिन्ही* का उच्चारण बिंदी(˙) सहित *जिउं, जिन्हीं* करना है परंतु *सबाईआ* का उच्चारण बिंदी रहित करना है ।

अर्थ : हरि का नाम एक ऐसे आनंद का स्रोत है कि इसका सुमिरन करने वाले भी पवित्र एवं सुनने वाले भी पवित्र हो जाते हैं, जो इसे मन में बसाते हैं वह भी पवित्र हो जाते हैं ।

नानक कहते हैं - जिन व्यक्तियों ने गुरु की शरण में हरि का नाम सुमिरन किया है वह शुद्ध आचरण वाले हो गए हैं ।।१७।।

भाव – गुरु की शरण में जो मनुष्य परमात्मा के नाम का सुमिरन करते हैं, उनमें आत्मिक आनंद उत्पन्न होता है, जिसके कारण माया वाले गुण उसे प्रभावित नहीं कर पाते । उनका जीवन ऊंचा हो जाता है तथा उनकी संगत से दूसरों का भी आचरण पवित्र हो जाता है ।

करमी सहजु न ऊपजै, विणु सहजै सहसा न जाइ।।
नह जाइ सहसा कितै संजमि, रहे करम कमाए ।।
सहसै जीउ मलीणु है, कितु संजमि धोता जाए ।।

पद अर्थ : **करमी** - बाहर से धार्मिक दिखने वाले कर्म, कर्मकांडों के द्वारा । **सहजु** - अडोल, आत्मिक टिकावे । **सहसा** - माया के मोह से पैदा हुआ । **चिंता** – सहम । **कितै-संजमि** - किसी युक्ति से । **रहे** - थक गए । **मलीणु** - मैला । **कितु** - किसके द्वारा । **कितु संजमि** - किसी युक्ति द्वारा ।

अर्थ : माया के मोह में फंसे मन में सदा हड़बड़ाहट व चिन्ता रहती है, यह चिन्ता आत्मिक आनंद के बिना दूर नहीं होती, व आत्मिक आनंद बाहरी धार्मिक कर्मकाण्डों से प्राप्त नहीं होता। अनेकों व्यक्ति ऐसे कर्म कर-कर के हार गए, पर मन की चिन्ता, अशान्ति आदि ऐसे किसी भी तरीके से दूर नहीं होती । जब तक मन सहम (डर) में है, भयभीत है, तब तक मैला रहता है

। मन की मैल बाहरी युक्तियों अर्थात दिखलावे के कर्मकांडों नहीं धोई जा सकती ।

मंनु धोवहु, सबदि लागहु, हरि सिउ रहहु चितु लाइ ।।
कहै नानकु , गुर परसादी सहजु उपजै, इहु सहसा इव जाइ ।।१८।।

उच्चारण : *करमी, सिउ,* का उच्चारण बिंदी ( ) सहित *करमीं सिउं* करना है ।*परसादी पतमाऽदी* का उच्चारण पंजाबी के *पतमाऽदी परसादी* के *म* के पैर में बिंदीं ( ) लगाकर *पतमाऽदी परशादी* करना है ।

पद अर्थ : मंनु - मन । इव - इस प्रकार ।

अर्थ : हे भाई ! गुरु के शबद से जुड़ो, प्रभु के चरणों में सदा मन जोड़े रखो, यदि मन को धोना है तो इस प्रकार धोवो ।

नानक कहते हैं : गुरु की कृपा से ही मनुष्य के अंदर आत्मिक आनंद उत्पन्न होता है । इस प्रकार मन की अशान्ति व चिंता दूर हो जाती है ।।१८।।

भाव : माया के मोह में फंसा मन अशान्त व चिंतित रहता है । इस का इलाज है आत्मिक आनंद, तथा आत्मिक आनंद प्राप्त होता है गुरु की कृपा द्वारा । इसलिए गुरु के शब्द में एकाग्रचित्त रहो, तथा प्रभु की याद में सदा लीन रहो ।

जीअहु मैले बाहरहु निरमल ।।
बाहरहु निरमल जीअहु त मैले, तिनी जनमु जूऐ हारिआ ।।

पद अर्थ : जीअहु - जीवन से, मन में से । तिनी - उन्हीं व्यक्तियों ने ।

अर्थ : केवल बाहर से दिखाई देने वाले धार्मिक कर्मकांड करने वाले व्यक्ति मन में विकारों से मैले रहते हैं । वे केवल देखने में ही पवित्र लगते हैं । जो व्यक्ति बाहर से पवित्र दिखे, व मन से विकारी हो, ऐसा व्यक्ति ऐसे अपना जीवन व्यर्थ गंवा लेता है जैसे जुआरी जूए में सब कुछ हार जाता है ।

एह तिसना वडा रोगु लगा, मरणु मनहु विसारिआ ।।
वेदा महि नामु उतमु, सो सुणहि नाही, फिरहि जिउ बेतालिआ ।।

पद अर्थ : मरणु - मौत । बेताले - भूत । जिन - जिन्होंने ।

अर्थ : उनको अंदर ही अंदर से माया की तृष्णा का रोग खाता जाता है, माया के लालच में मौत को उन्होंने भुला दिया होता है । ताकि वे लोगों को धार्मिक दिख सकें, इसलिए वेद आदि धर्म पुस्तकों के उदाहरण देते हैं, पर

वेद आदि धर्म पुस्तकों में जो प्रभु के नाम के जाप का उत्तम उपदेश है उस पर वे ध्यान नहीं देते व भूतों की भांति संसार में विचरण करते रहते हैं, भाव बेताल की भांति जीवन भर भटकते रहते हैं और जीवन की ताल से विरक्त रहते हैं ।

कहै नानकु, जिन सचु तजिआ, कूड़े लागे,
तिनी जनमु जूऐ हारिआ ।।१९।।

उच्चारण : (1) *जीअहु(जीउं), बाहरहु(बाहरो), तिनीः, मनहु(मनो), सुणहि, नाही, फिरहि, जिउ शब्दों का उच्चारण* बिंदी (˙) सहित करना है ।

(2) तिसना *तिसना* . उच्चारण पंजाबी के *स सस्से* के पैर में बिंदी लगाकर *तिशना तिशना* करना है।

अर्थ : नानक कहते हैं कि जिन्होंने प्रभु के नाम का सुमिरन छोड़ा है, वे जो माया के मोह में फंसे हैं, उन्होंने अपने जीवन की बाजी जुए में हार ली समझो ।।१९।।

भाव : केवल बाहर से धार्मिक दिखाई देने से, धार्मिक कर्म कांड कर लेने से, मन में से विकारों की मैल उतरती नहीं, बल्कि बनी रहती है, मन को माया के मोह का रोग लगा रहता है । जहां रोग है वहां आनंद कहां ? इस कारण सदा हरि के नाम का सुमिरन करते रहो । यही है मन की आरोग्यता का तरीका, व आत्मिक आनंद देने वाला सूत्र।

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ।।
बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल, सतिगुर ते करणी कमाणी ।।
कूड़ की, सोइ पहुंचै नाही, मनसा सचि समाणी ।।

पद अर्थ : सतिगुर ते - गुरु से मिली हुई, जिसका उपदेश गुरु से मिला है । **करणी** - आचरण, करने योग्य कर्म । **कमाणी** - कमाई है । **कूड़** - माया का मोह । **सोइ** - खबर । **मनसा** - मन का विचार, मन में माया के मोह का विचार । **सचि** - प्रभु के सिमरन में ।

अर्थ : जो व्यक्ति ऊंचे आचरण के लिए वह कार्य करते हैं जिसकी सूझ गुरु द्वारा मिलती है, वह मन से भी पवित्र होते हैं, व बाहर से भी पवित्र होते हैं । भाव, उनका संसारियों से भी व्यवहार अच्छा होता है । वह बाहर से भी पवित्र व अंदर से भी पवित्र रहते हैं । उनके मन में माया के विचार, सुमिरन द्वारा ही समाप्त हो जाते हैं । उनके मन में इतना आत्मिक आनंद बनता है कि माया का मोह उनको छू नहीं पाता ।

जनमु रतनु जिनी खटिआ, भले से वणजारे ।।

कहै नानकु, जिनु मंनु निरमलु, सदा रहहि गुर नाले ।।२०।।

उच्चारण : *जीअहु, बाहरहु, रहहि, जिनी:* का उच्चारण बिंदी (ं) सहित *जीअहुं, बाहरहुं, रहहिं व जिनीं:* करना है । *पहुचै* का उच्चारण *पहुंचै* करना है । *भले* का उच्चारण आद्याक्षर लगाकर भल्ले करना है ।

पद अर्थ : **सेती** - साथ । **सनमुख** - के सम्मुख हो सकने वाला, सुरखरू, मुक्त । **होवै** - होना चाहे । **जीअहु** - दिल से । **गुर नाले** -. गुरु के चरणों में ।

अर्थ : यदि कोई सिख गुरु के सामने निर्भीक होकर, गर्व से उनके सामने पेश होना चाहता है, यदि सिख यह चाहता है कि कि किसी खोटे कर्म के कारण उसे गुरू के सम्मुख आंखें नीची न करनी पड़ें, तो एक ही रास्ता है कि वह सच्चे दिल से गुरू के चरणों में मन को टिकाए ।

गुर के चरन हिरदै धिआए, अंतर आतमै समालै ।।
आपु छडि सदा रहै परणै, गुर बिनु अवरु न जाणै कोए।।
कहै नानकु, सुणहु संतहु, सो सिखु सनमुखु होए।।२१।।

उच्चारण: *जीअहु* का उच्चारण *जीअहुं, संतहु* का *संतो, सुणहु* का *सुणों* करना है ।

पद अर्थ : **समाले** - याद रखो । **आपु** - स्वयं भाव । **परणै** - आसरे ।

अर्थ : सिख गुरु के चरणों को अपने हृदय में (जगह दे) बसा ले, अपनी आत्मा में संभाल कर रखे, *मैं* की भावना छोड़कर सदा गुरु के आसरे रहे, गुरु के बिना किसी और को अपने आत्मिक जीवन का, आत्मिक आनंद को स्रोत न समझे ।

नानक कहते हैं - हे संतजनो ! सुनो, (उपरोक्त गुणों वाला)सिख ही प्रसन्नचित रह सकता है, वही आत्मिक आनंद प्राप्त कर सकता है ।।२१।।

भाव : वही मनुष्य प्रसन्न चित्त रह सकता है, वही मनुष्य आत्मिक आनंद मान सकता है, जो सच्चे हृदय से गुरु के चरणों से जुड़ा रहता है, जो अहंकार को छोड़कर गुरु को अपना आसरा बनाई रखता है ।

जे को, गुर ते वेमुख होवै, बिनु सतिगुर मुकति न पावै ।।
पावै मुकति न होरथै कोई, पुछहु बिबेकीआ जाए ।।

पद अर्थ : **वेमुख** -मुंह मोड़ना । **मुकति** - विकारों से छुटकारा, माया के प्रभाव से मुक्ति । **होरथै** - किसी और स्थान से । **बिबेकी** - पारखी, विद्वान, विचारवान । **जाए** - जाए, जाकर ।

अर्थ : जहां माया के मोह के कारण (सहम) भय है, वहां आत्मिक आनंद नहीं फैल सकता, यदि कोई मनुष्य गुरु से मुंह फेर ले, उसे आत्मिक

आनंद नसीब नहीं हो सकता, क्योंकि गुरु के बिना किसी भी और स्थान से माया के बंधनों से छुटकारा नहीं मिलता ।

अनेक ज्नी भरमि आवै, विणु सतिगुर मुकति न पाए ।।
फिरि मुकति पाए लागि चरणी, सतिग़ुर सबदु सुणाए ।।
कहै नानकु, वीचारि देखहु, विणु सतिगुर मुकति न पाए ।।२२।।

उच्चारण : *बिबेकीआ, जूनी, चरणी* शब्दों का उच्चारण बिंदी (ं) सहित *बिबेकीआं, जूनीं, चरणीं* करना है ।*पुछहु* का उच्चारण *पुछो, देखहु* का उच्चारण *देखो* करना है ।

पद अर्थ : भरमि आवै - भटक कर आता है ।

अर्थ : माया के मोह में फंसा मनुष्य अनेक जन्मों से भटकता हुआ आता है, गुरु की शरण के बिना इसे मोह से मुक्ति नहीं मिलती । आखिर गुरु के चरणों में ही माया के मोह से मुक्ति मिलती है, क्योंकि गुरु सही जीवन मार्ग का उपदेश सुनाता है ।

नानक कहते हैं - विचार कर देख लो, गुरु के बिना माया के बंध न से मुक्ति नहीं मिलती, व इस मुक्ति के बिना आत्मिक आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती ।।२२।।

भाव : माया के मोह व आत्मिक आनंद - यह दोनों एक साथ हृदय में नहीं टिक सकते व माया के मोह से मुक्ति तब ही मिलती है जब मनुष्य गुरु की शरण में पड़ता है । गुरु मनुष्य को जीवन का सही मार्ग बताता है ।

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो, गावहु सची बाणी ।।
बाणी त गावहु गुरू केरी, बाणीआ सिरि बाणी ।।
जिन कउ नदरि करमु होवै, हिरदै तिना समाणी ।।

पद अर्थ : सची बाणी - प्रभु के गुण-गान वाले शब्द, सर्वकाली प्रभु के साथ जोड़ने वाली बाणी । सिरि - सिर पर, सब से श्रेष्ठ । नदरि - कृपा दृष्टि । करमु -कृपा ।

अर्थ : हे सतिगुर के प्यारे सिखो ! आओ, सदा थिर रहने वाले प्रभु से जोड़ने वाली बाणी मिल कर गाओ । अपने गुरु की बाणी गाओ, यह बाणी और सब बाणियों से श्रेष्ठ है । यह बाणी उन्हीं व्यक्तियों के हृदय में टिकती है जिन पर प्रभु की कृपा दृष्टि हो।

पीवहु अंम्रितु, सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ।।
कहै नानकु, सदा गावहु, एह सची बाणी ।।२३।।

उच्चारण : *सतिगुरू* का उच्चारण सतिगुरु नहीं करना । *पिआरिहो* का

उच्चारण *पिआरिओ, गावहु* का *गावो, पीवहु* का *पीवो,* रहहु *का* रहो, जपिहु *का* जपिओ, *सारिग का सारिंग,* बाणीआ का *बाणीआं करना है ।*

पद अर्थ : हरि रंगि - हरि के प्रेम में । **सारिग पाणी** - धनुरधारी प्रभु । **केरी** - की । **अंम्रित** - आत्मिक आनंद देने वाला नाम जल ।

अर्थ : हे प्यारे गुरसिखो ! प्रभु के नाम का सुमिरन करो, परमात्मा के प्रेम में सदा (लीन) जुड़े रहो, यह आनंद देने वाला, आत्मिक सार्थकता देने वाला नाम जल पीयो ।

नानक जी कहते हैं - हे गुरसिखो ! परमात्मा के गुण-गान वाली यह बाणी गाओ, इसी में आत्मिक आनंद है ।।२३।।

भाव : जिन व्यक्तियों पर प्रभु की कृपा दृष्टि होती है, वह परमात्मा के गुण-गान वाली बाणी अपने हृदय में बसाए रखते हैं । गुरबाणी द्वारा वे आत्मिक आनंद देने वाला नाम जल पीते रहते हैं ।

सतिगुरू बिना, होर कची है बाणी ।।
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु, होर कची बाणी ।।
कहदे कचे सुणदे कचे, कची आखि वखाणी ।।।

पद अर्थ : **सतिगुरू बिना** - गुरु की इच्छा के विपरीत । **कची** - मन को नीचा करने वाली वाणी, मन को हल्का करने वाली, ऊंचे आत्मिक आनंद से नीचे गिराने वाली वाणी । **कचे** - वह व्यक्ति जिन का मन कमजोर है, जो माया से प्रभावित हो सकते हैं । **सुणदे कचे** - सुनने वालों के मन भी विचलित हो सकते हैं ।

अर्थ : गुरु की आशा के विपरीत बाणी, माया की झलक के सामने विचलित करके झुका देने वाली होती है । वास्तव में गुरु के आशय के विपरीत जाने वाली बाणी से मन कमजोर हो जाते हैं, सुनने वालों के मन पथ भ्रष्ट होते हैं, तथा ऐसी बाणी पढ़-पढ़ कर जो व्याख्या करते हैं, वह भी कमजोर मन के हो जाते हैं ।

हरि हरि नित करहि रसना, कहिआ कछु न जाणी ।।
चितु जिन का हिरि लइआ माइआ, बोलनि पए रवाणी ।।
कहै नानकु सतिगुरू बाझहु, होर कची बाणी ।।२४।।

पद अर्थ : कहिआ - जो कुछ मुँह से कहते हैं । **हिरि लइआ** - चुरा लिया । **रवाणी** - मौखिकं, ऊपरी दिल से । **कची** - कच्चों ने, कमजोर मन वालों ने ।

अर्थ : यदि वह व्यक्ति जुबान से हरि नाम बोलें भी, तो भी जो कुछ वह बोलते हैं उसमें उनकी सांझ नहीं होती, क्योंकि उनके मन को माया ने मोह रखा है, वह जो कुछ बोलते हैं, ऊपर से ही बोलते हैं, मन से नहीं ।

नानक जी कहते हैं - गुरु आशय से विपरीत बाणी, मनुष्य के मन को आत्मिक अनंद के टिकाने से नीचे गिराती है ।।२४।।

भाव : गुरु आशय से विपरीत जाने वाली बाणी, परमात्मा के गुण-गान से परस्पर उल्टी बाणी मन को डगमगाती है; माया की झलक के सामने कमजोर करती है । ऐसी बाणी को प्रतिदिन पढ़ने सुनने वालों के मन, माया के सम्मुख कमजोर हो जाते हैं। ऐसे कमजोर हो चुके मन में आत्मिक रस का आनंद नहीं बन सकता। वह मन तो माया के मोह में फंसा होता है ।

गुर का सबदु रतंनु है, हीरे जितु जड़ाउ ।।
सबदु रतनु जितु मंनु लागा, एहु होआ समाउ ।।

पद अर्थ : **रतंनु** - रतन, अनमोल निधि । **जितु** - जिस शबद में । **हीरे** - परमात्मा के गुण । **जड़ाउ** - जड़े हुए । **मंनु** - मन । **एहु समाउ** - ऐसी लीनता ।

अर्थ : सतिगुरु का शबद एक ऐसी अमूल्य वस्तु है जिसमें प्रभु की अच्छाईयां भरी हुई हैं । शबद मानो, ऐसा रतन है कि उसके द्वारा मनुष्य का मन परमात्मा की याद में जुड़ (टिक) जाता है, परमात्मा में एक अचरज लीनता बनी रहती है ।

सबदु सेती मनु मिलिआ, सचै लाइआ भाउ ।।
आपे हीरा, रतनु आपे, जिस नो देइ बुझाइ ।।
कहै नानकु, सबद रतनु है, हीरा जितु जड़ाउ ।।।२५।।

पद अर्थ : **सचैं** - सदा थिर प्रभु में । **भाउ** - प्यार । **बुझाइ देइ** - समझ-बूझ देता है । **हीरा** - प्रभु, परमात्मा का नाम । **आपे** - स्वयं ही ।

अर्थ : यदि शबद में मनुष्य का मन जुड़ जाए तो इस की कृपा से सदा अटल रहने वाले प्रभु में उसका प्रेम बन जाता है । उसके मन में परमात्मा की ओर से एक अमूल्य निधि है, इसमें प्रभु का स्तुति-गायन भरा गया है । जो मनुष्य इस बाणी से अपना नाता जोड़ता है, उसमें प्रभु का प्रेम बन जाता है तथा जहां प्रभु का प्रेम है, वहां आत्मिक आनंद है ।

सिव सकति आपि उपाइ कै, करता आपे हुकमु वरताए ।।
हुकमु वरताए आपि वेखै, गुरमुखि किसै बुझाए ।।
तोड़े बंधन, होवै मुकतु, सबदु मंनि वसाए ।।

पद अर्थ : **सिव** - जीवात्मा । **सकति** - माया । **आपे** - आप ही । **हुकमु** - वह आदेश कि जीवों पर माया का प्रभाव पडा रहे ।

अर्थ : जीवात्मा तथा माया पैदा करके परमात्मा स्वयं ही यह हुक्म

देता है कि माया का प्रभाव जीवों पर पड़ा रहे । प्रभु स्वयं ही यह आदेश चलाता है, स्वयं ही यह खेल देखता है कि किस प्रकार जीव, माया के हाथों नाच रहे हैं, प्रभु किसी किसी विशेष व्यक्ति को ही गुरु के द्वारा इस खेल की जानकारी देता है .। जिस पर प्रभु कृपा करता है उसके माया मोह के बंधन तोड़ देता है, वह व्यक्ति माया के बंधन से मुक्त हो जाता है, क्योंकि वह गुरु का शबद अपने मन में बसा लेता है ।

गुरमुखि जिस नो आपि करे, सु होवै,
ऐकस सिउ लिव लाए ।।
कहै नानकु, आपि करता, आपे हुकमु बुझाए ।।२६।।

उच्चारण: *सिव सकति* का उच्चारण *शिव शकति, सिउ* का उच्चारण *सिउं* करना है ।

पद अर्थ : **गुरमुखि** - गुरु के द्वारा । **किसै** - किसी बिरले को । **बुझाए** - सूझ देता है । **मुकतु** - माया के प्रभाव से मुक्त, स्वतन्त्र । **मंनि** - मन में । **गुरमुखि** - गुरु के मार्ग पर चलने वाला ।

अर्थ : गुरु के बताए मार्ग पर चलने योग्य वही व्यक्ति होता है जिसको ईश्वर यह सामर्थ्य प्रदान करता है, वह मनुष्य एक प्रभु के चरणों में अपनी वृति को जोड़ता है, उसके मन में आत्मिक आनंद बनता है तथा वह माया के मोह में से बाहर निकलता है ।

नानक जी कहते हैं - परमात्मा स्वयं ही जीवात्मा व माया की रचना करता है तथा स्वयं ही किसी किसी मनुष्य को सह सूझ देता है कि माया का प्रभाव भी उसके अपने ही आदेशनुसार जगत में चल रहा है ।।२६।।

भाव : परमात्मा की इच्छानुसार जीव माया के हाथों नाच रहे हैं । परमात्मा जिस किसी को गुरु के बताए मार्ग पर चलने योग्य बनाता है, वह मनुष्य माया के बंधनों से मुक्त हो जाता है, उसकी वृत्ति प्रभु के चरणों में जुड़ी रहती है, उसके अंदर आत्मिक आनंद बना रहता है ।

सिम्रित सासत्र पुन पाप बीचारदे, ततै सार न जाणी ।।
ततै सार न जाणी गुरु बाझहु, ततै सार न जाणी ।।

पद अर्थ : **ततै सार** - तत्व की सूझ, वास्तविकता की समझ, जो वास्तव में ग्रहण करने योग्य वस्तु है उसकी समझ, आत्मिक आनंद का ज्ञान ।

अर्थ : समृतियां शास्त्र आदि पढ़ने वाले पंडित केवल यही विचार करते हैं कि इन पुस्तकों के अनुसार पाप क्या है एवं पुण्य क्या है, उन्हें आत्मिक

रूप का आनंद नहीं आ सकता । यह बात सही है कि सतिगुरु की शरण के बिना आत्मिक आनंद नहीं आ सकता ।

तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता, सुतिआ रैणि विहाणी ।।
गुर किरपा ते, से जन जागे,
जिना हरि मनि वसिआ, बोलहि अंम्रित बाणी ।।

पद अर्थ : **तिही गुणी** - माया के तीन स्वभावों में । **भ्रमि** - भटक भटक कर । **रैणि** - उमर, रात । **से** - वह व्यक्ति । **मनि** - मन में ।

अर्थ : यह संसार तीन गुणों में भटक भटक कर पागल हुआ पड़ा है, माया के मोह में सोते-सोते ही सारी उम्र गुजर जाती है । स्मृतियों, शास्त्रों की विचारें इस नींद से नहीं जगा सकतीं ।

मोह की नींद में से गुरु की कृपा से केवल वह मनुष्य ही जागते हैं, जिनके मन में परमात्मा का नाम बसता है, जो प्रभु के गुण-गान की बाणी का उच्चारण करते हैं ।

कहै नानकु, सो ततु पाए, जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै,
जागत रैणि विहाणी ।। २७।।

पद अर्थ : **अनदिनु** - हर रोज, प्रतिदिन । **अंम्रित बाणी** - आत्मिक जीवन देने वाली बाणी । **जागत** - विकारों की ओर से सुचेत रहते ।

अर्थ : नानक जी कहते हैं - वही मनुष्य आत्मिक आनंद प्राप्त करता है जो हर समय प्रभु की याद में लगा रहता है, जिसकी उम्र इस प्रकार मोह की नींद में से जागते बीतती है ।।२७।।

भाव : कर्म काण्डों के अनुसार कौन सा पुण्य कर्म है व कौन सा पाप कर्म है - केवल यही विचार मनुष्य में आत्मिक आनंद नहीं पैदा कर सकते। । गुरु की कृपा से जो मनुष्य सदा हरि नाम का सुमिरन करता है, गुण-गान की बाणी पढ़ता है, वह विकारों की ओर से सुचेत रहता है व आत्मिक आनंद प्राप्त करता है ।

माता के उदर महि, प्रतिपाल करे, सो किउ मनहु विसारीऐ ।।
मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता, जि अगनि महि आहारु पहुचावए ।।

पद अर्थ : **उदर** - पेट । **मनहु** - मन से । **किउं विसारीऐ** - विसारना नहीं चाहिए । **एवडु** - इतना बड़ा । **अगनि** - आग । **आहारु** - खुराक ।

अर्थ : यदि आत्मिक आनंद प्राप्त करना है तो उस प्रभु को कभी नहीं भुलाना चाहिए, जो माँ के पेट में भी पालन करता है, इतने बड़े प्रभु को मन से नहीं भुलाना चाहिए जो माँ के पेट की आग में भी आहार पुहँचाता है

उसनो किहु पोहि न सकी, जिस नउ आपणी लिव लावए ।।
आपणी लिव, आपे लाए, गुरमुखि सदा समालीऐ ।।
कहै नानकु, एवडु दाता, सो किउ मनहु विसारीऐ ।।२८।।

पद अर्थ : उस नो - उस व्यक्ति को । किहु - कुछ । लिव - प्रीत । गुरमुखि - गुरु के द्वारा। समालीऐ - सुमिरन करना चाहिए, हृदय में बसाना चाहिए ।

उच्चारण : *महि, मनहु (मनो), किउ, नउं* का उच्चारण बिंदी ( ) सहित *महिं, मनहुं(मनों), किउं, नउं करना है ।*

अर्थ : यह मोह ही है जो आनंद से वंचित रखता है, उस व्यक्ति को मोह व लालच छू नहीं सकते जिस को प्रभु अपने चरणों की प्रीति प्रदान करता है । पर जीव के वश में क्या है? प्रभु स्वयं ही अपनी प्रीति की निधि प्रदान करता है । हे भाई ! गुरु की शरण पड़कर सदा उसका सुमिरन करते रहना चाहिए ।

नानक जी कहते हैं - यदि आत्मिक आनंद की आवश्यकता है तो इतने बड़े दानी प्रभु को कभी भी नहीं भूलना चाहिए।।२८।।

भाव : प्रभु जिस मनुष्य को अपने चरणों का प्रेम प्रदान करता है, उस मनुष्य पर कोई भी विकार अपना प्रभाव नहीं डाल सकता । गुरु की शरण पड़ कर, गुरु के बताए मार्ग पर चलकर, सदा परमात्मा की याद अपने हृदय में टिकाए रखनी चाहिए । आत्मिक आनंद की प्राप्ति का यही स्रोत है ।

जैसी अगनि उदर महि, तैसी बाहरि माइआ ।।
माइआ अगनि सभ इको जेही, करतै खेलु रचाइआ ।।

पद अर्थ : उदर - माँ का पेट । बाहरि - संसार में । करतै - करतार ने

अर्थ : जैसे माँ के पेट में आग है वैसे बाहर जगत में माया दुखदाई है । माया व आग एक जैसी हैं, करतार ने ऐसा ही खेल रचा दिया है ।

जा तिसु भाणा ता जंमिआ, परवारि भला भाइआ ।।
लिव छुड़की लगी त्रिसना, माइआ अमरु वरताइआ ।।

पद अर्थ : जा तिसु भाणा - जब उस प्रभु को अच्छा लगे । परिवार - परिवार में भला भाइआ - प्यारा लगने लग पड़ा । छुड़की - समाप्त हुई, टूट गई । अमरु- हुक्म । अमरु वरताइआ - हुक्म चला दिया, जोर डाल दिया ।

अर्थ : जब परमात्मा की रज़ा होती है, जीव पैदा होता है, परिवार में प्यारा जुड़ता है । परिवार के सदस्य उस नए जन्म लिए बालक को प्रेम करते हैं। इस प्रेम में फंस कर उस प्रभु के चरणों से प्रीत की तार टूट जाती है।

माया की तृष्णा जकड़ती है। माया उस पर अपना जोर डाल लेती है ।
एह माइआ, जितु हरि विसरै, मोहु उपजै, भाउ दूजा लाइआ ।।
कहै नानकु, गुर परसादी जिना लिव लागी,
तिनी विचे माइआ पाइआ ।।२९।।

पद अर्थ : जितु - जिसके द्वारा । **भाउ दूजा** - प्रभु के बिना किसी और का प्यार ।

उच्चारण : *महि, जा, ता, त्रिसना, जिन्हा व तिनी* का उच्चारण बिंदी (̇) सहित *महिं, जां, तां, त्रिशनां जिन्हां, तिनीं* करना है । *करतै* बड़ी 'ए' की मात्रा से *'भला'* आद्याक्षर के बिनां, मोहु का उच्चारण मोह करना है ।

अर्थ : माया है ही ऐसी कि इसके द्वारा प्रभु भूल जाता है, दुनियां का मोह पैदा हो जाता है, प्रभु के बिना और का और ही प्यार पैदा हो जाता है। फिर ऐसी दशा में आत्मिक आनंद कहां से मिले ?
नानक जी कहते हैं - गुरु की कृपा से जिन व्यक्तियों की प्रीति की डोर प्रभु चरणों से जुड़ी रहती है, उनको माया का उपयोग करते हुए भी आत्मिक आनंद मिल जाता है ।

भाव : गुरु की कृपा से जिन व्यक्तियों की वृति सांसारिक कार्य करते हुए भी प्रभु के चरणों से जुड़ी रहती है, उनके अंदर आत्मिक आनंद बना रहता है । संसार की दशा यह है कि जीव के पैदा होते ही मां बाप आदि के प्रेम द्वारा, माया मनुष्य को प्रभु चरणों से अलग कर देती है ।
हरि आपि अमुलकु है, मुलि ना पाइआ जाइ ।।
मुलि न पाइआ जाइ, किसै विटहु, रहे लोक विललाइ ।।
पद अर्थ : अमुलकु - जो किसी भी कीमत पर न मिल सके । **मुलि** - कीमत से, कीमत दे कर । **किसै विटहु** - किसी भी व्यक्ति से । **विललाई** - खप-खप कर । रहे - रह गए, थक गए, हार गए।

अर्थ : जब तक परमात्मा का मिलाप न हो तब तक आनंद नहीं माना जा सकता, पर प्रभु का मूल्य नहीं पड़ सकता, परमात्मा रूपी धन किसी कीमत पर नहीं मिल सकता । जीव खप-खप कर, हार गए, किसी को धन आदि कीमत देकर परमात्मा नहीं मिला ।
ऐसा सतिगुर जे मिलै तिसनो सिरु सउपीऐ, जिचहु आपु जाइ ।।
जिस दा जीउ, तिसु मिलि रहै, हरि वसै मनि आइ ।।
हरि आपि अमुलकु है, भाग तिना के नानका, जिन हरि पलै पाइ ।।३०।।
उच्चारण : *विटहु (विटो), विचहु (विचो), सउपीऐ* का उच्चारण बिंदी (̇) *सहित विटहुं*

(विटों), विचहु (विचों), सउंपीऐ करना है ।

पद अर्थ : आपु - आपा भाव । **जिस का** - जिस परमात्मा ने पैदा किया । **जीउ** - जीव। **मनि** - मन में । **पलै पाइ** - गुरु की शरण पड़ जाता है ।

अर्थ : हाँ, यदि ऐसा गुरु मिल जाए जिसके मिलने पर मनुष्य में से अहंकार की भावना निकल जाए।उस गुरु के मिलने पर जीव उस हरि के चरणों में जुड़ा रहे, वह हरि उसके मन में बस जाए जिसका वह पैदा किया हुआ है, तो उस गुरु के आगे अपना सिर भेंट कर देना चाहिए (स्वयं को अर्पण कर देना चाहिए)।

हे नानक ! परमात्मा का मूल्य नहीं पड़ सकता, परमात्मा रूपी धन किसी कीमत पर नहीं मिलता, पर परमात्मा जिन को गुरु के चरणों से जोड़ देता है उनके के भाग्य जाग जाते हैं ।

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ।।
हरि रासि मेरी मनु वणजारा, सतिगुर ते रासि जाणी ।।

पद अर्थ : रासि - व्यापार करने के लिए धन की पूंजी । **वणजारा** - व्यापार करने वाला । **सतिगुर ते जाणी** - गुरु से पहचान प्राप्त की ।

अर्थ : अपने गुरु के द्वारा ही मुझे पता चला है (आत्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए) परमात्मा का नाम ही मेरी जमा पूंजी (हो सकती है), मेरा मन (इस व्यापार)का व्यापारी बन गया है । परमात्मा का नाम मेरी सारी जमा पूंजी है व मेरा मन व्यापारी हो गया है ।

हरि हरि नित जपिहु जीअहुं, लाहा खटिहु दिहाड़ी ।।
एहु धनु तिना मिलिआ, जिन हरि आपे भाणा ।।
कहै नानकु हरि रासि मेरी, मनु होआ वणजारा ।।३१।।

उच्चारण : ***जपहि का उच्चारण जपिओ, जीअहु का जीओ, खटिहु का खटिओ, एहु का एहो करना है ।***

पद अर्थ : जीअहु - दिल से, पूरे प्रेम से । **दिहाड़ी** - प्रतिदिन । **भाणा** - अच्छा लगा ।

अर्थ : (हे भाई !) तुम भी सदा प्रेम से हरि के नाम का सुमिरन किया करो, व हर रोज आत्मिक आनंद का लाभ लो । हरि नाम का, आत्मिक आनंद का यह धन उन लोगों को मिलता है, जो स्वयं प्रभु उन्हें अपनी इच्छा से देता है ।

नानक जी कहते हैं - प्रभु का नाम मेरी पूंजी बन गयी है, अब गुरु की कृपा

से मैं आत्मिक आनंद की कमाई करता हूं ।।३१।।

भाव : गुरु से यह ज्ञान होता है कि आत्मिक आनंद की कमाई के लिए परमात्मा का नाम ही मनुष्य का धन बनना चाहिए । यह पूंजी (धन) उन को ही मिलती है जिन पर प्रभु स्वयं कृपा करता है ।

ए रसना, तू अन रसि राचि रही, तेरी पिआस न जाइ ।।
पिआस न जाइ होरतु कितै, जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ।।

पद अर्थ : **ए रसना** - हे मेरी जीभ । **अन रसि** - भिन्न व इतर रसों में । **राचि रही** - मस्त हो रही हैं । **पिआस** - जुबान का चस्का । **होरतु कितै** - किसी और जगह से । **पलै न पाइ** – नहीं मिलता ।

अर्थ : हे मेरी जिव्हा ! तू और के और ही स्वादों में मस्त हो रही है, इस प्रकार तेरे चस्के वाली रुचि दूर नहीं हो सकती । जब तक हरि के सुमिरन का आनंद प्राप्त न हो, तब तक किसी और जगह के स्वादों में चस्का समाप्त नहीं हो सकता ।

हरि रसु पाइ पलै, पीऐ हरि रसु, बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ।।
एहु हरि रसु करमी पाइऐ, सतिगुरु मिलै जिसु आइ ।।

पद अर्थ : **पीऐ** - पीता है । **बहुड़ि** - दुबारा, फिर । **करमी** - प्रभु की कृपा से ।

अर्थ : जिस मनुष्य को परमात्मा के नाम का आनंद मिल जाए, जो मनुष्य हरि सिमरन का आनंद मानने लगे, उसे माया की तृष्णा नहीं आकर्षित कर सकती । पर हरि के नाम का आनंद प्रभु की कृपा द्वारा ही मिलता है, यह उसे मिलता है जिसे गुरु मिलता है ।

कहै नानकु, होरि अनरस सभि वीसरे, जा हरि वसै मनि आई ।।३२।।

उच्चारण : *जा* का उच्चारण *जां, एहु* का उच्चारण एह करना है ।

पद अर्थ : **होरि अनरस** - और दूसरे सारे स्वाद । **सभि** - सारे । **मनि** - मन में ।

अर्थ : नानक जी कहते हैं - जब हरि सुमिरन का आनंद मन में बस जाए, तब अन्य सारे स्वाद (चस्के) भूल जाते हैं ।

भाव : कई प्रकार के भोजन खाने पर भी मनुष्य की जीभ का स्वाद समाप्त नहीं होता । इस स्वाद में मनुष्य बहुत भटकता है । पर जब मनुष्य को हरिनाम सुमिरन का आनंद आने लग जाता है, जीभ का स्वाद समाप्त हो जाता है । परमात्मा की कृपा से जिसे गुरु मिल जाए, उसको हरि नाम का

आनंद प्राप्त होता है ।

ए सरीरा मेरिआ, हरि तुम महि जोति रखी, ता तू जग महि आइआ ।।
हरि जोति रखी, तुधु विचि, ता तू जग महि आइआ ।।

अर्थ : हे मेरे शरीर ! तूं दुनियां के पदार्थों में आनंद ढूंढता है, पर आनंद का स्त्रोत तो परमात्मा है जो तेरे भीतर बसा है । तूं संसार में आया ही तब, जब हरि ने अपनी ज्योति तेरे अंदर रखी । यकीन मानो जब परमात्मा ने तेरे अंदर अपनी ज्योति रखी, तब ही तूं संसार में आया ।

हरि आपे माता, आपे पिता, जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ।।
गुर परसादी बुझिआ, ता चलतु होआ, चलतु नदरी आइआ ।।

पद अर्थ : जीउ - जीव । उपाइ - पैदा करके । जगतु दिखाइआ - जीव को जगत में भेजता है । चलतु - खेल, तमाशा ।

अर्थः जो परमपिता परमात्मा, जीव को पैदा कर के उसको संसार में भेजता है, वह स्वयं ही इस जीव की माता है, स्वयं ही इसका पिता है । प्रभु स्वयं ही माता-पिता की भांति जीव को हर प्रकार के सुख उपलब्ध करवाता है, सुख आनंद प्रदान करने वाला प्रभु स्वयं ही है । पर जीव है कि संसार में से, मायावादी पदार्थों में से आनंद खोजता है । जब गुरू की कृपा द्वारा जीव को ज्ञान हो जाता है तो इस को समझ आ जाती है कि संसार तो एक खेल ही है । फिर यह संसार जीव को मदारी का तमाशा ही लगने लगता है । इसमें अटल आनंद, सच्चिदानंद नहीं हो सकता ।

कहै नानकु, स्रिसटि का मूलु रचिआ, जोति राखी,
ता तू जग महि आइआ ।।३३।।

पद अर्थ : मूलु रचिआ - जड़ से रचना की । जिनि - जिस प्रभु ने ।

अर्थ : नानक जी कहते हैं - हे मेरे शरीर ! जब प्रभु ने सृष्टि रचना की जड़ बांधी, तेरे अंदर अपनी ज्योति डाली, तब तूं संसार में आया यानी तूने जन्म लिया ।।३३।।

भाव : सुख-आनंद प्रदान करने वाला, है ही परमात्मा । परन्तु मनुष्य संसार के मायावी पदार्थों में आनंद ढूंढता है । गुरु की कृपा से ज्ञान होता है कि यह संसार तो मदारी का तमाशा ही है, इसमें स्थाई आत्मिक आनंद नहीं मिल सकता ।

मनि चाउ भइआ, प्रभ आगमु सुणिआ ।।
हरि मंगल गाओ सखी, ग्रिहु मंदरु बणिआ ।।

पद अर्थ : चाउ - आनंद । प्रभु आगमु - प्रभु का आना । सखी - हे सखी, हे मेरी जान । मंगलु - खुशी का गीत, प्रभु के गुणगान का गीत । ग्रिहि - हृदय रूपी घर । मंदरु - प्रभु का निवास स्थान ।

अर्थ : अपने हृदय की सेज पर प्रभु परमेश्वर के आने के बारे में मैंने सुन लिया है। मैंने अनुभव कर लिया है कि प्रभु मेरे हृदय में बस गया है, अब मेरे मन में आनंद बन गया है । हे मेरी जिन्दड़ी, हे मेरी जान ! मेरे इस हृदय रूपी घर में प्रभु पति का निवास स्थान बन गया है, अब तूं प्रभु का गुण गान कर!

हरि गाउ मंगलु निति सखीए, सोगु दूखु न विआपए ।।
गुर चरन लागे दिन सभागे, आपणा पिरु जापए ।।

पद अर्थ : न विआपए - व्याप्त नहीं होता, अपना दबाव नहीं डालता । सभागे - भाग्यशाली । जापए - दिख गया है ।

अर्थ : हे मेरी जान ! सदा प्रभु का गुण गान करना! ऐसा करने से कोई चिंता व दुख तुझ को छू नहीं सकते। वह दिन भाग्यशाली होते हैं जब सिर, गुरु के चरणों में झुकता (जुड़ा) है, प्यारा (पति), मालिक प्रभु हृदय में से दिखलाई दे जाता है ।

अनहत बाणी, गुर सबदि जाणी, हरि नामु हरि रसु भोगो ।।
कहै नानक प्रभु आपि मिलिआ, करण कारण जोगो ।।३४।।

पद अर्थ : अनहत - एक रस । अनहत बाणी - एक रस, गुण-गान की लय । सबदि - शबद द्वारा । जोगो -समर्थ ।

अर्थ : गुरु के शब्द द्वारा एकरस गुण-गान की लय से सामंजस्य बन जाता है । प्रभु के मिलाप का आनंद मिलता है । प्रभु का नाम मिल जाता है ।

नानक कहते हैं - हे मेरी जान ! खुशी का गीत गावो ! सब कुछ करने वाला विधाता स्वयं आ कर मुझे मिला है ।।३४।।

भाव : मनुष्य के अंदर आत्मिक आनंद तब ही पैदा होता है जब उसके हृदय में परमात्मा के नाम का प्रकाश होता है । तब गुरु का हृदय विकारों में से पवित्र हो जाता है। कोई चिंता दु:ख उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकता । पर यह प्रकाश गुरु के द्वारा ही होता है ।

उच्चारण: ग्रिहु अथवा गृहु का उच्चारण गृह करना है । सबद का उच्चारण शबद करना है ।

ए सरीरा मेरिआ, इसु जग महिं आइ कै,
किआ तुधु करम कमाइआ ।।
कि करम कमाइआ तुधु सरीरा, जा तू जग महि आइआ ।।
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ, सो हरि मनि न वसाइआ ।।

पद अर्थ : **किआ करम** - कौन से काम ? और के और काम ही । **जिनि हरि** - जिस हरि ने । **तेरा रचनु रचिआ**- तुझे पैदा किया । **मनि** - मनि में ।

अर्थ : हे मेरे शरीर ! इस संसार में जन्म ले कर तूं और के और ही कार्यों में उलझा रहा । जब से तूं संसार में आया है, तूं प्रभु सुमिरन को छोड़ कर दुनियावी व मायावी काम करता रहा है । जिस हरि ने तुझे जन्म दिया, उसे तूने अपने मन में नहीं बसाया अर्थात उसकी याद में तूं कभी नहीं जुड़ा ।

गुर परसादी हरि मंनि वसिआ, पुरबि लिखिआ पाइआ ।।
कहै नानकु, एहु सरीरु परवाणु होआ,
जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ।।३५।।

पद अर्थ : **जिनि** - जिस मनुष्य ने । **परवाणु** - स्वीकार सफल ।

उच्चारण : महि, सिउ, जा का उच्चारण बिंदी (ं) सहित महिं, सिउं, जां करना है । कै का उच्चारण बड़ी ऐ की मात्रा (ै) सहित यथावत करना है । एहु का उच्चारण एह करना है ।

अर्थ : पर, हे मेरे शरीर! तेरे भी बस में क्या है? जिस ने मनुष्य के पूर्व कि कर्मों के संस्कार बलवान होते हैं, गुरु की कृपा से उसके मन में परमात्मा का निवास होता है । वही हरि का सिमरन करता है । नानक जी कहते हैं - जिस मनुष्य ने गुरु के चरणों में मन को जोड़ लिया है, उसका यह शरीर, यह मानव जन्म सफल हो जाता है । वह मनुष्य, वह मनोरथ पूरा कर लेता है जिसके लिए यह बनाया गया है ।।३५।।

भाव : पिछले किए कर्मों के संस्कारों से प्रेरित हुआ मनुष्य, बार बार वही कर्म ही करता रहता है । नाम सिमरन की ओर वह स्वयं नहीं ज़ुड़ सकता। । फिर आत्मिक आनंद की अनुभूति उसे कहां से हो। सौभाग्य से यदि वह मनुष्य गुरु की शरण लेता है तब इसका जीवन सफल होता है ।

ए नेत्रहु मेरिहो, हरि तुम महि जोति धरी,
हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ।।
हरि बनु अवरु न देखहु कोई, नदरी हरि निहालिआ ।।

पद अर्थ : **नेत्र** -आँखें । **जोति** -रोशनी । **निहालिआ** - दिखाई दिया।

अर्थ : हे मेरी अखियो ! परमात्मा ने तुम्हारे अंदर अपनी ज्योति टिकाई है । तभी तो तुम देखने योग्य हुई हो। जिधर ज्योति टिकाओ उधर ही प्रभु का दीदार करो, प्रभु के बिना और कोई दूसरा न दिखे, आँखों से हरि के ही दर्शन करो ।

ऐहु विसु संसारु तुम देखदे, एहु हरि का रूपु है,
हरि रूपु नदरी आइआ ।।

पद अर्थ : **नदरी** - नज़र, आँखों से । **विसु** - विश्व, सम्पूर्ण । **नदरी आइआ** - दिखाई देता है ।

अर्थ : हे मेरे नेत्रो ! यह सारा संसार जो तुम देख रहे हो, यह प्रभु का ही रूप है, प्रभु का ही रूप दिख रहा है ।

गुर परसादी बुझिआ, जा वेखा हरि इकु है,
हरि बिनु अवरु न कोई ।।
कहै नानकु, इहि नेत्र अंध से,
सतिगुर मिलिऐ, दिब द्रिसटि होई।।३६।।

पद अर्थ : **अंध** - अन्धे । **से** - थे । **दिब** - दिव्य, चमकीली, रोशनी । **द्रिसटी** - नज़र ।

अर्थ : गुरु की कृपा से मुझे पता चला है, अब मैं जब अपने चारों तरफ देखता हूं, सब जगह प्रभु ही दिखाई देता है, उसके बिना और कुछ नहीं ।

नानक कहते हैं - गुरु से मिलने से पूर्व ये आंखें अन्धी थीं, जब गुरु मिला, इनमें रोशनी आई, इन्हें सब जगह परमात्मा दिखाई देने लगा । यही दीदार आनंद का मूल है ।।३६।।

भाव : जब तक मनुष्य संसार में किसी को वैर की भावना से देखता है और किसी को मैत्री भाव से, तब तक उसमें अपने पराए की भावना है, वहां आत्मिक आनंद नहीं हो सकता । गुरु से मिलकर मनुष्य की आंखे खुलती हैं, फिर इस को सब जगह प्रभु ही प्रभु दिखाई देता है । यही आनंद का स्त्रोत है ।

ए स्रवणहु मेरिहो, साचै, सुनणे नो पठाए ।।
साचै, सुनणै नो पठाए, सरीरि लाए, सुणहु सति बाणी ।।

पद अर्थ : **स्रवण** - कान। **पठाए** - भेजे । **साचै** - सदा थिर, अटल । **सरीर** - सरीर में । **सति बाणी** - सर्वकाली प्रभु के यशगायन वाली बाणी ।

अर्थ : हे मेरे कानो ! प्रभु के गुण गायन की बाणी सुना करो, सर्वकाली करतार

ने तुम्हें यही सुनने के लिए बनाया है, इस शरीर से जोड़ा है ।

जितु सुणी, मनु तनु हरिआ होआ, रसना रसि समाणी ।।

पद अर्थ : जित - जिस के द्वारा । जितु सुणी - जिसके सुनने से । रसि - आनंद में ।

अर्थ : इस स्तुति-गायन की बाणी सुनने से, तन-मन आनंद से भरपूर हो जाता है तथा जुबान आनंद में मस्त हो जाती है ।

सचु अलख विडाणी, ता की गति कही न जाए ।।
कहै नानकु, अंम्रितु नामु सुणहु, पवित्र होवहु,
साचै, सुनणै नो पठाए ।।३७।।

पद अर्थ : वडाणी - अचरज । गति - हालत । अंम्रित - आत्मिक आनंद देने वाला ।

उच्चारण : स्रवणहु का उच्चारण स्रवणों, मेरिहो का उच्चारण मेरिओ, सुणहु का सुणो, ता का तां, होवहु का होवो करना है ।

अर्थ : सदा कायम रहने वाले प्रभु का रूप आश्चर्यजनक है, उसका कोई चक्र चिन्ह नहीं दर्शाया जा सकता। यह नहीं कहा जा सकता कि वह कैसा है, उसके गुण कहने-सुनने से केवल यही लाभ है
कि मनुष्य को आत्मिक आनंद प्राप्त होता है, तभी नानक जी कहते हैं ---
आत्मिक आनंद देने वाला नाम सुनो, आप पवित्रं हो जाओगे, परमात्मा ने तुम्हें यही सुनने के लिए (भेजा) बनाया है ।।३७।।

भाव : जिस मनुष्य के कानों को अभी तक निंदा चुगली सुनने की आदत है, उसके हृदय में आत्मिक आनंद पैदा नहीं हुआ । आत्मिक आनंद की प्राप्ति उसी मनुष्य को होती है जिसके कान, जिसकी जीभ,
जिसकी सारी ज्ञानेंद्रियां प्रभु के गुण-गान में मग्न रहती हैं । वही ज्ञानेद्रियाँ पवित्र हैं ।

हरि, जीओ गुफा अंदरि अंदरि रखि कै, वाजा पवणु वजाइआ ।।
वजाइआ वाजा पउण, उन दुआरे परगटु कीए, दसवा गुपतु रखाइआ ।।

पद अर्थ : जीउ - जान । गुफा - शरीर । पवणु वाजा वजाइआ - श्वास रूपी बाजा बजाया, बोलने की शक्ति दी । नउ दुआरै - नौ गोलकें - एक मुँह, दो कान, दो आँखें, दो नासिका, गुदा, व लिंग । दसवां दुआर - भाव, दिमाग जिससे मनुष्य विचार सकता है ।

अर्थः परमात्मा ने इस जान को शरीर रूपी गुफा में टिका कर, जीव को बोलने की शक्ति प्रदान की है । जहां बोलने की शक्ति प्रदान की है, वहीं

नाक, कान आदि नौं कर्म-इंद्रियों को प्रकट कर दिया है - परंतु दसम द्वार, बुद्धि, जो अनुभव केंद्र है, को छिपा कर रखा हुआ है।

गुर दुआरै लाइ भावनी, इकना दसवा दुआरु दिखाइआ।।
तह अनेक रूप नाउ नव निधि, तिस दा अंतु न जाई पाइआ ।।

अर्थ : प्रभु ने जिनको गुरु के दर से जोड़ कर अपने नाम की श्रद्धा दी, उनको सुमिंरन की विचार व चिंतन की सामर्थ्य भी दी, जो आत्मिक आनंद का मूल है । उस अवस्था में मनुष्य को अनेकों रंगों-रूपों में व्यापक प्रभु का वह नाम रूपी, नौ खजानों का भण्डार भी भर जाता है जिसका अंत नहीं हो सकता, जो कभी समाप्त नहीं होता।

कहै नानकु, हरि पिआरै, जीओ गुफा अंदरि रखि कै,
वाजा पवणु बजाइआ ।।३८।।

अर्थ : नानक जी कहते हैं - प्यारे प्रभु ने जीव को शरीर की गुफा में टिका कर बोलने की शक्ति भी प्रदान की है ।।३८।।

भाव : माया के प्रभाव के कारण ज्ञानेंद्रियां मनुष्य को मायावी पदार्थों की ओर दौड़ाती हैं । यह मार्ग अच्छा है या बुरा, यह विचार करने वाली सत्यता दबी ही रहती है । जिस मनुष्य को परमात्मा, गुरु के दर तक पहुंचाता है, उस की विचारसत्ता जागृत हो उठती है । वह मनुष्य, प्रभु के सुमिरन में मग्न हो कर आत्मिक आनंद लेता है ।

एहु साचा सोहिला, साचै घरि गावहु ।।
गावहु त सोहिला घरि साचै, जिथै सदा सचु धिआवहे ।।

पद अर्थ : सोहिला - खुशी का गीत, आत्मिक आनंद पैदा करने वाला गीत, प्रभु के गुण-गान की बाणी । **साचै घरि** - सदा कायम रहने वाले घर में, संगत में । **सचु** - सर्वकाली प्रभु । **गावहु** -गावै, सत संगत गाती है ।

अर्थ : हे भाई ! प्रभु के स्तुति-गायन की यह बाणी संगत में बैठ कर गाया करो । उस सत्संग में आत्मिक आनंद देने वाली बाणी गाया करो, जहां गुरमुख-जन, सर्वकाली प्रभु के सुमिरन के गीत गाते है।

सचो धिआवहि, जा तुधु भावहि, गुरमुखि जिना बुझावहे ।।
इहु सचु सभना का खसमु है, जिसु बखसे सो जन पावहे ।।
कहै नानकु, सचु सोहिला, सचै घरि गावहे ।।३९।।

पद अर्थ :भावहि- जो तुझे अच्छा लगे, हे प्रभु ! **बुझावहे** - तूं बुद्धि दे । **गुरमुखि** - गुरु के द्वारा । **पावहे** - प्राप्त करते हैं, पाए । **गावहे** - गाएं, गाते हैं ।

अर्थ : हे प्रभु ! तुझ सर्वकाली प्रभु का सुमिरन ये जीव तभी करते

हैं जब ये तुझे भाते हैं, अच्छे लगते हैं, जिन्हें तूं स्वयं गुरू के द्वारा ज्ञान प्रदान करता है ।

हे भाई ! अटल प्रभु सब जीवों का मालिक है । जिस-जिस जीव पर वह कृपा करता है, वही जीव तुझे पा लेते हैं । नानक जी कहते हैं, वह सत-संगत में बैठ कर, प्रभु के गुण-गायन की बाणी
का गायन करते हैं ।।३९।।

भाव : जिन मनुष्यों पर प्रभु की कृपा होती है, वे गुरु के बताए मार्ग पर चल कर, साध संगत में टिक कर, परमात्मा के स्तुति-गायन की बाणी का गायन करते हैं व आत्मिक आनंद का रस्सास्वादन करते हैं।

उच्चारण: एहु का उच्चारण एह, गावहु का उच्चारण गावो, करना है । धिआवहि, भावहि, बुझावहे, गावहे का उच्चारण बिंदी (ं) लगाकर धिआवहिं, भावहिं, बुझावहें, गावहें करना है ।

अनदु, सुणहु वडभागीहो, सगल मनोरथ पूरे ।।
पारब्रहम प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ।।

पद अर्थ : विसूरे - चिन्ता, परेशानी ।

अर्थ : हे भाग्यवानो ! सुनो, आनंद वही है जिस अवस्था में मन की सारी तृष्णाएं समाप्त हो जाती है । सारे संकल्प पूरे हो जाते हैं । परमात्मा प्रभु मिल जाता है, सारी चिन्ताएं परेशानियां समाप्त हो जाती हैं।

दूख रोग संताप उतरे, सुणी सची बाणी ।।
संत साजन भए सरसे, पूरे गुर ते जाणी ।।

पद अर्थ : संताप - क्लेश । सची बाणी - अटल प्रभु के गुण गान की बाणी । सरसे - स-रस, हरे, आनंदपूर्ण । गुर ते - गुरु से ।

अर्थ : अकाल पुरख के गुण-गान की बाणी सुनने से सारे दुख, रोग, झगड़े मिट जाते हैं । जो संत गुरमुख पूरे गुरु से गुण-गान की बाणी के संग जुड़ जाना सीख लेते हैं, उनके हृदय खिल उठते हैं, प्रफुल्लित हो जाते हैं ।

पद अर्थ : सतिगुरु रहिआ भरपूरे - गुरु अपनी बाणी से परिपूर्ण है, बाणी गुरु रूप है । अनहद -एक रस । तूरे - वाजे । मनोरथ- मन की इच्छाएं ।

अर्थ : इस बाणी को सुनने वाले, बोलने वाले, सब पवित्र हो जाते हैं। इस बाणी में उनको सतिगुरु ही दिखाई देता है । नानक जी प्रार्थना करते हैं - जो व्यक्ति गुरु के चरण लग जाते हैं, उनके मन में समरस खुशी की

शहनाइयां बज उठती हैं । उनके अंदर आत्मिक आनंद पैदा हो जाता है ।।४०।।

भाव : आत्मिक आनंद के लक्षण : जिस मनुष्य के अंदर आत्मिक आनंद उत्पन्न होता है, उसकी चिन्ताएं, परेशानियां दूर हो जाती हैं, कोई दुख, रोग, कोई क्लेश उस पर प्रभाव नहीं डाल सकता । आनंद की यह अवस्था, सतिगुरु की बाणी से प्राप्त होती है । इस बाणी में उन्हें सतिगुरु का रूप प्रत्यक्ष दिखलाई देता है ।

■

੧ੴ वाहिगुरू जी की फतहि।।

सिख मिशनरी कालेज का उद्देश्य

हम सिख हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि हमें सिखी असूलों(नियमों) का पता हो, गुरवाणी के अर्थ भाव, सिख इतिहास की जानकारी, सिख रहित मर्यादा के असूल सिख फिलासफी, सिख सभ्यता की हर गुरसिख को जानकारी होनी अति आवश्यक है। यदि हमें इनका ज्ञान नहीं हो हम कैसे सिख कहला सकते हैं ? पाठ हम करते जा रहे हैं, पर यदि कोई हमसे गुरवाणी के किसी वाक्य का अर्थ पूछ ले और हम जवाब न दे सकें तो यह हमारे लिए कितनी शर्मनाक बात होगी। दस गुरू साहिवों एवं प्राचीन गुरसिखों के इतिहास की जानकारी होनी आवश्यक है, यदि हम अपना वेमिसाल इतिहास नहीं जानते तो हम कैसे दूसरे को वता सकेंगे कि हम कौन-सी विरासत के मालिक हैं। सिख रहत् मर्यादा के उसूल कौन-कौन से हैं, इस विषय पर हम आमतौर पर अज्ञानी हैं। घर में पाठ रखना हो या जीवन में कोई संस्कार करना हो, गुरमत क्या है, इसे जानने के लिए हमें ग्रंथी सिंघों या ज्ञानी व्यक्ति पर निर्भर होना पड़ता है। पर क्या सिख होते हुए ऐसे असूलों की जानकारी हमें स्वयं को होनी ज़रूरी नहीं ?

आज हम देखते हैं हमारे में जो कमज़ोरियां आ रही हें, उसका मुख्य कारण यही है कि हमने सिखी के वारे में ज्ञान प्राप्त करने की ज़िमेवारी नहीं समझी। यदि हमें गुरसिखी के असूलों का स्वयं ज्ञान हो तो हम अपने नौजवानों को जो अनजाने में दाड़ी व केशों की वेअदवी कर रहे हैं, नशे पी रहे हैं, देहधारी पाखंडी गुरूओं को मान रहे हैं, को गुरवाणी के उसूल दृढ़ करवा कर, खून से लिखा अपना वलिदानी इतिहास सुना कर सिख धर्म की ओर प्रेरित कर सकते हैं। जो नौजवान आज वागी हो रहे हैं तो इसमें उन वेचारों का क्या दोष ? दोष तो हमारा अपना है, हमारे प्रचारकों का है, हमारी अगवाई करने वालों का है जो ऐसे नौजवानों को सिख धर्म की ओर नहीं प्रेरित कर सकें।

आज ना तो सिखी हमें माता-पिता से, घर से ही मिल रही है (क्योंकि माता-पिता ही सिखी से दूर हो चुके हैं तथा मादा प्रस्ती में वुरी तरह उलझे हुए हैं) व ना ही सिखी 'खालसा' स्कूलों, कालेजों से ही मिल रही है, क्योंकि किसी स्कूल या कालेज को छोड़कर सिखी के संदेश देने का प्रवंध हम इनमें कर ही नहीं सके या किया ही

नहीं, जहां पहले खालसा, स्कूलों कालेजों में होता था। गुरद्वारों में से सिखी की सिक्षा मिलनी चाहिए थी क्योंकि गुरुद्वारे वने ही सिखी का प्रचार करने के लिए, पर आज गुरुद्वारों में फैली गुटवाजी, पार्टीवाजी गुरुद्वारे पर कब्जे की भूख, गोलक (गुरूद्वारे में चढ़ाए हुए धन) की लड़ाई, नौजवानों के मार्ग में बाधा वनी हुई हैं, जिस कारण वह गुरूद्वारों में हो रहे धर्म प्रचार को नहीं स्वीकारते। फिर जो प्रचारक हमने अपने धर्म स्थानों में लगा रखे हैं, उनमें से वहु-गिनती अनपढ़ हैं। यदि हमारे वहुत सारे प्रचारकों की, ना स्कूली शिक्षा हो, ना वह धर्म के क्षेत्र में पूरा ज्ञान रखते हों, ना हि उच्च महान् जीवन, ना ही प्रचार के लिए मिशनरी उत्साह हो तो फिर यह आशा कैसे रखी जा सकती है कि ऐसे प्रचारक नौजवान पीढ़ी पर अपने प्रचार का अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे। सत्य तो यह है कि प्रचारकों का यह क्षेत्र केवल एकमात्र माया कमाने का एक साधन बना कर रख दिया गया है, व प्रचार का वास्तविक उद्देश्य अलोप होता जा रहा है।

जव हम दूसरे धर्मों ईसाई मत, इस्लाम मत आदि की ओर देखते हैं तो उनके प्रचारक व प्रचारक तैयार करने वाली संस्थाएं (अदारे) देख कर दंग रह जाते हैं कि कैसे उन्होंने ग्यारह सालों का लम्बा समय लगाकर लाखों कि गिनती में प्रचारक तैयार किए हैं व प्रचार के क्षेत्र में उन्हें पूरी तरह तैयार किया है। पर जव हम अपने प्रचारकों की ओर देखते हैं तो असहाय से होकर रह जाते हैं क्योंकि हमारे प्रवंधकों ने प्रचारकों की तैयारी के लिए कोई वड़े संगठित व योग्य मिशनरी कालेज नहीं खोला, जहां प्रचारकों को सिख धर्म की पूरी शिक्षा देकर तैयार करके प्रचार के क्षेत्र में भेजा जा सके। योग्य प्रचारकों की कमी कारण ही हमारा धर्म जो दुनिया का सवसे वढ़िया व आलमगीर धर्म है। जो हर देश, प्रदेश में, बिना किसी जात-पात, अमीर-गरीव, वर्ग भेद, रंग रूप आदि विना भेदभाव प्रचार किया जा सकता है, संसार में तो क्या पंजाव में भी सही ढंग से नहीं प्रचार सका

उपरोक्त कमी को महसूस करते हुए 'सिंख मिशनरी कालेज' आरम्भ किया गया है, जिस द्वारा 'दो साला सिख मिशनरी कोर्स (Correspondonce Course) करवाने का प्रवंध किया गया है। पढ़े-लिखे नौजवान, इस दो साला सिख मीशनरी कोर्स करने के वाद (Elementry Sikh Missionaries)के तौर पर कार्य करेगें। यह गुरमति प्रचारक अपनी कार्य करते हुए प्रचार का काम (Part time) में विना किसी प्रकार की तन्खाह फल आदि के करेंगे।